न्दामामा
फ़रवरी १९८६

*"जिस दिन मुझे अपना पहला मुंहासा दिखाई दिया...
क्लिअरेसिल का मुझे उसी दिन पता चला.*

वो दिन मुझे आज भी याद है. दीदी की शादी को सिर्फ़ एक हफ़्ता रह गया था और मेरे मन में लड्डू फूट रहे थे. बस, शीशे के सामने खड़ी मैं अपने नये कपड़े पहन कर देख रही थी, कि मैं डर से कांप गई... मुझे अपने गाल पर कुछ दिखाई पड़ा ... एक मुंहासा. मेरा पहला पहला मुंहासा. मैं घबरा गई ... ये कैसी मुसीबत नई! नहीं .... अभी नहीं!

तभी दीदी अंदर आईं. उन्होंने मेरा चेहरा देखा और कहा, "अरे पगली. इस उम्र में तो मुंहासे सभी को निकलते हैं. मुझे भी निकले थे और मैंने क्लिअरेसिल लगाई. तुम भी क्लिअरेसिल लगाओ." मैंने ऐसा ही किया. और सचमुच क्लिअरेसिल ने असर दिखाया.

अब मैं क्या बताऊं आपसे कि दीदी की शादी में मुझे कितना मज़ा आया.

क्लिअरेसिल कील-मुंहासे साफ़ करे और उन्हें फैलने से रोके.

OBM/5687/HN

क्लिअरेसिल

कील-मुंहासों का स्पेशलिस्ट, जो सचमुच असरदार है

सुपर रिन की चमकार ज़्यादा सफ़ेद

किसी भी अन्य डिटर्जेंट टिकिया या बार से ज़्यादा सफ़ेद

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

चन्दामामा

संस्थापकः चक्रपाणि संचालकः नागिरेड्डी

जो लोग केवल स्वार्थ को अपना परमार्थ मानते हैं, उनके हृदय में विवेक, न्याय-अन्याय तथा भले-बुरे का कोई महत्व नहीं होता। ऐसे लोग अपने कामों के दुष्परिणामों के बारे में कुछ भी विचार नहीं करते। 'देवी के आभूषण' शीर्षक कहानी में इस तथ्य का सुन्दर निरूपण किया गया है।

अमर वाणी

द्रव्यं लब्धं द्यूतेनैव, दारा मित्रं द्यूतेनैव ।
दत्तं भुक्तं द्यूतेनैव, सर्वं नष्टं द्यूतेनैव ॥

[अर्थात् जुआ खेलकर धन प्राप्त कर लिया। जुए से ही स्त्री और मित्र भी प्राप्त कर लिये। जुआ खेलने से जो धन प्राप्त हुआ, उसी में से दान भी दे दिया और सुख भी भोग लिया। और इसी जुए से सब कुछ नष्ट भी कर दिया।]

वर्षः ३८ फरवरी, १९८६ अंकः ७

एक प्रतिः २.५० वार्षिक चन्दाः ३०.००

ATLAS
FunPop
THE SUPER-DUPER LOLLYPOP
FUN POPS
for happy pops. . . and moms, too!
AMC/85.

चन्दामामा के संवाद

खोजा गया भारी जहाज़

१५ अप्रेल १९१२ को उस समय का सबसे बड़ा 'टिटानिक' समुद्र में डूब गया था। उस जहाज़ में २२२४ यात्री थे, जिनमें से १५१३ काल-कवलित होगये। हाल ही में अमरीका के एक नौका-अनुसंधान संस्थान ने यह पता लगाया है कि वह जहाज़ उत्तर अटलान्टिक सागर में ढाई मील की गहराई में पड़ा हुआ है।

'समन्ता' हीरा

अमरीका-निवासिनी समन्ता नाम की एक छात्रा ने रूसी नेताओं के नाम पर एक पत्र लिखा कि वे विश्व-शांति के लिए आवश्यक कार्रवाई करें। इस लड़की के पत्र में निहित शुभभावना पर मुग्ध होकर रूसी नेताओं ने उसे १९८५ में रूस आने का निमंत्रण दिया। पर १९८४ की एक विमान-दुर्घटना में समन्ता की अकाल मृत्यु होगयी। उस लड़की की स्मृति में साइबेरिया की खदानों से प्राप्त होनेवाले हीरों में से सबसे बड़े हीरे को 'समन्ता' नाम दिया गया है।

चलनेवाला पर्वत

पाकिस्तान के निवासी आलमचन्ना नाम के एक बुजुर्ग ने हाल ही में न्यूयार्क नगर की गलियों में पैदल जाते हुए थोड़ी देर के लिए आवागमन को स्तब्ध कर दिया। आठ फुट तीन इंच ऊँचा चन्ना वहाँ के जन समुदाय के बीच एक चलते हुए पर्वत की तरह दिखाई दे रहा था। उसे देखते ही लोग आश्चर्यचकित होकर उसके आसपास घिर आये। इस घटना को दूरदर्शन-केंद्रों ने एक चित्र के रूप में प्रस्तुत किया।

क्या आप जानते हैं ?

१. हिन्द महासागर के द्वीप समूह में सबसे बड़ा द्वीप कौन सा है ?

२. भूमध्य सागर के द्वीपों में सबसे बड़ा द्वीप कौन-सा है ?

३. १९६२ में ज्वालामुखी पर्वत में विस्फोट होने पर किस द्वीप को ख़ाली कर दिया गया था ?

४. फिज़ी द्वीप समूहों की संख्या कितनी है ?

५. फिलिप्पाइन्स गणतंत्र में कितने द्वीप हैं ?

(उत्तर ६५ वें पृष्ठ पर देखें)

अम्बा

उस समय काशी राज्य पर होत्रवाहन नाम के राजा का राज्य था। उनके अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका नाम की तीन पुत्रियां थीं। वे जब विवाह योग्य होगयीं, तब राजा ने उनके स्वयंवर की घोषणा की।

स्वयंवर में भीष्म अपने छोटे भाई विचित्रवीर्य का विवाह करने के लिए आये और वहाँ पर आये हुए सब राजकुमारों को पराजित कर तीनों राजकुमारियों को बलपूर्वक हस्तिनापुर ले गये।

अम्बा ने भीष्म को बताया कि उसने इसके पूर्व ही साल्व को वर लिया है। भीष्म ने राजकन्या अम्बा की मनोकामना पूरी करने के लिए उसे राजा साल्व के यहाँ भिजवा दिया। लेकिन साल्व ने अपहरण की हुई राजकुमारी के साथ विवाह करने से इनकार कर दिया।

अम्बा दुखी होकर भीष्म के पास लौट आयी। उसने सारा वृत्तान्त सुनाकर भीष्म से विवाह करने का अनुरोध किया। भीष्म इस अनुरोध को स्वीकार नहीं कर सके। भीष्म के गुरु परशुराम ने उन्हें आदेश दिया कि वे इस विवाह को स्वीकार कर लें, लेकिन भीष्म ने अपनी विवशता बताते हुए स्पष्ट कह दिया कि वे अपनी प्रतिज्ञा भंग नहीं कर सकेंगे।

अम्बा अपने विवाह में विघ्न डालनेवाले भीष्म के प्रति क्रोध से भर उठी। उसने प्रतिकार की इच्छ से शिव को लक्ष्य कर कठिन तपस्या की। शिव ने उसे वर दिया कि दूसरे जन्म में उसकी इच्छ पूर्ण होगी।

उसी वर के प्रभाव से अम्बा अगले जन्म में द्रुपद की पुत्री हुई। उसने बालावस्था से ही राजओं के योग्क विद्याओं का अभ्यास किया और कुशल योद्धा बन गयी। महाभारत युद्ध के पूर्व द्रुपद-कन्या ने यक्षिणी की प्रार्थना करके पुरुष का लक्षण प्राप्त किया और शिखण्डी बन गयी।

कुरुक्षेत्र में हुए इस महाभारत युद्ध में जब भीष्म और अर्जुन का युद्ध हुआ, तब इसी शिखण्डी की आड़ लेकर अर्जुन ने भीष्म पर शर-संधान किया। भीष्म ने एक नारी पर अस्त्र का प्रयोग करना अनुचित समझा। अर्जुन ने मौका पाकर भीष्म को बाणों से बींध दिया। शिखण्डी के कारण भीष्म को शर-शयन सहना पड़ा। इस प्रकार अम्बा की प्रतिज्ञा सफल हुई।

उलझन की गाँठ
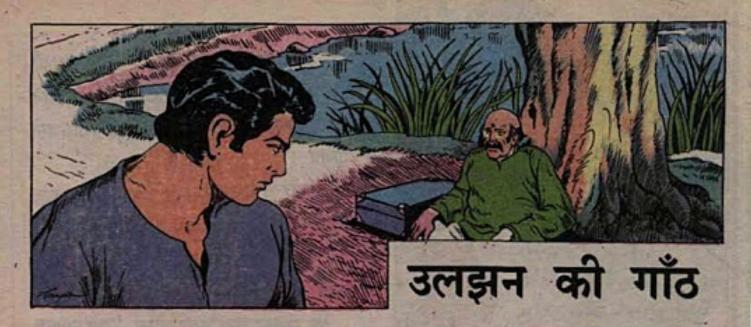
चंद्रनाथ एक सम्पन्न व्यक्ति था, लेकिन दो वर्ष की बीमारी में उसका सब कुछ स्वाहा हो गया। जिस समय उसने अपने प्राण छोड़े उसका इकलौता बेटा गिरिनाथ न केवल इस संसार में अकेला रह गया बल्कि पिता के ऋण के बोझ से दब गया था। फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी और नौकरी करने के ख्याल से पास ही के एक छोटे से शहर इंद्र नगर की ओर चल पड़ा।

गिरिनाथ दिन रात पैदल चल कर रास्ता तय करके थोड़ी दूर गया ही था कि सड़क के किनारे एक पेड़ की छाया में एक बूढ़ा आदमी बैठा दिखाई पड़ा। उसने गिरिनाथ को रोक कर कहा, "बेटे, क्या तुम शहर की तरफ़ जा रहे हो ? मैं भी वहीं जाना चाहता हूँ लेकिन कोई सवारी नहीं मिल रही है। अगर तुम मेरे साथ चलो तो मुझे बहुत सहारा मिल जाएगा। एक तो मैं बूढ़ा हूँ ऊपर से दिल की बीमारी का रोगी। तुम्हारे इस उपकार को मैं कभी नहीं भूलूँगा।"

गिरिनाथ बेचारा खुद ही थका मांदा था लेकिन पैसे नहीं थे कि वह किराये की गाड़ी कर पाता। वह बूढ़े की बात सुनकर सोच में पड़ गया। अभी वह कुछ कहता, इसके पहले ही बूढ़ा बोला, "बेटे, तुम मुझे गलत मत समझना, गाड़ी का किराया मैं दूँगा। मुझे सिर्फ तुम्हारे साथ की जरूरत है, क्योंकिमैं रोगी हूँ और इधर कुछ कायर भी हो गया हूँ। अकेले कहीं भी जाते हुए मुझे बहुत डर लगता है। अगर तुम मेरी मदद करोगे तो मैं तुम्हारा आभारी रहूँगा।"

गिरिनाथ ने कहा, "बाबा, आप कैसी बात कर रहे हैं। मैं आपका बेटा हूँ इसमें आभारी होने की क्या बात है ? हम दोनों ही अकेले हैं। साथ-साथ आराम से रास्ता कट जाएगा। इस में दोनों का भला है।" थोड़ी देर बाद एक किराये की गाड़ी आयी। बूढ़े ने गिरिनाथ से कहा, "बेटे, अगर तुम बुरा न मानो तो मेरा सन्दूक

गिरिधर कुमार
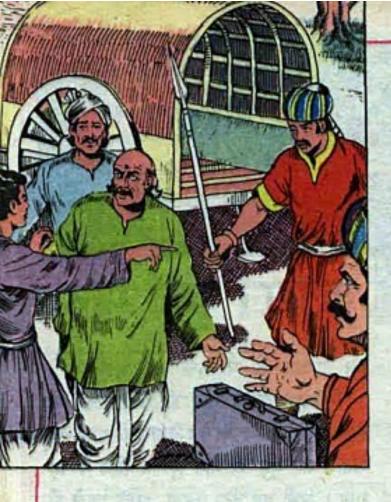
उठा कर गाड़ी पर रख दो। मुझे वैद्यों ने भारी बोझ उठाने के लिए मना कर रखा है।"

उसी वक्त गाड़ी वाला अपने बैलों को खिलाने के लिए घास लेने चला गया। जब वह वापस आया तो गिरिनाथ ने उस बूढ़े का सन्दूक उठा कर गाड़ी पर रख दिया और बूढ़े को अपने हाथ का सहारा देकर गाड़ी पर चढा दिया। गाड़ी जब शहर की सीमा पर पहुँची, उस समय सूरज डूबने को था।

गाड़ी के शहर की प्रमुख सड़क पर पहुँचने पर दो सिपाही गाड़ी के पास आकर पूछने लगे, "तुम लोग कहाँ से आ रहे हो? हमें गाड़ी की तलाशी लेनी है।"

यह सब सुन कर बूढ़े का चेहरा पीला पड़ गया और वह घबरा कर बोला, "महोदय, मैं दिल की बीमारी से पीड़ित हूँ। इलाज करवाने के लिए शहर जा रहा हूँ। अतः मुझे शीघ्र जाने दीजिए।"

सिपाहियों ने उससे कहा, "हम तुम्हारे माल की तलाशी लेगें। अपने सन्दूक की चाभी हमें दो। उसके बाद तुम कहीं भी जाने के लिए स्वतंत्र हो।"

यह सुनकर बूढ़ा तुरन्त बोला, "यह सन्दूक मेरा नहीं है। सामने बैठे जवान का है।" यह कहकर वह विस्मित युवक की ओर क्रोध भरी दृष्टि डाल कर बोला, "अरे, तुम इतने आश्चर्य से क्या देख रहे हो? सन्दूक की चाभी उनके हाथ में क्यों नहीं दे देते?"

और भी आश्चर्य में भर कर युवक ने कहा, "चाभी मेरे हाथ में कैसे आई?"

बूढ़ा खीझ कर बोला— "तुम्हारी सन्दूक की चाभी तुम्हारे पास न होकर किसके पास होगी?"

इस बीच गाड़ी वाले ने गिरिनाथ से कहा, "सन्दूक की चाभी जल्दी इनको दे दो, क्योंकि मुझे शीघ्र ही अपने घर लौटना है।" गाड़ी वाले ने गिरिनाथ को सन्दूक को गाड़ी में रखते हुए स्वयं अपनी आँखों से देखा था। और वह समझ रहा था कि सन्दूक गिरिनाथ का ही है।

कुछ भी न समझ पाने पर गिरिनाथ चिन्ता में डूब गया। तब परेशान होकर सिपाहियों ने ताला तोड़ कर सन्दूक खोल लिया। उसमें

बहुत से पुराने वस्त्र भरे थे। कपड़ों को हटाने पर उन्हें एक थैली प्राप्त हुई जिसमें अनेक स्वर्ण आभूषण भरे हुए थे।

सिपाहियों ने गिरिनाथ को अपराधी समझ कर डांटना शुरु कर दिया, "चोर कहीं के! लगता है तुम्हीं ने मिर्जापुर के जमींदार के घर को लूटा होगा, लेकिन छुपाने से क्या चोरी का माल छिप सकता है?"

गिरिनाथ डर से कंपकंपता हुआ बार-बार विश्वास दिलाने की कोशिश कर रहा था, "यह सन्दूक मेरा नहीं है। सन्दूक इस बूढ़े का है, मेरी बात पर विश्वास कीजिए।"

इतना सुनते ही बूढ़ा रौद्र रूप धारण करके बोला, "अरे बदमाश कहीं के? तुम मेरे ऊपर चोरी का आरोप लगा रहे हो। तुम्हें मेरी बूढ़ी उम्र का भी ख्याल नहीं। जानते नहीं, बड़ों के साथ कैसे बात करते हैं।"

उन दोनों की बातें सुन कर सिपाही भी उलझन में पड़ गये और खीझ कर बोले, "कुछ समझ नहीं आ रहा है, तुममें से कौन सच बोल रहा है और कौन झूठ? तुम दोनों को ही थाने में चलना है। वहीं इस बात का फैसला हो जाएगा।" यह कह कर सिपाही दोनों को कोतवाली में ले गये।

कोतवाल गाड़ी वाले को पहले से ही जानता था अतः कोतवाल ने उसे भेज दिया। इसके बाद बूढ़े और गिरिनाथ से पूछताछ शुरु की। वहाँ भी दोनों बराबर यही कहते रहे, 'यह सन्दूक मेरा नहीं है, मेरा नहीं है।"
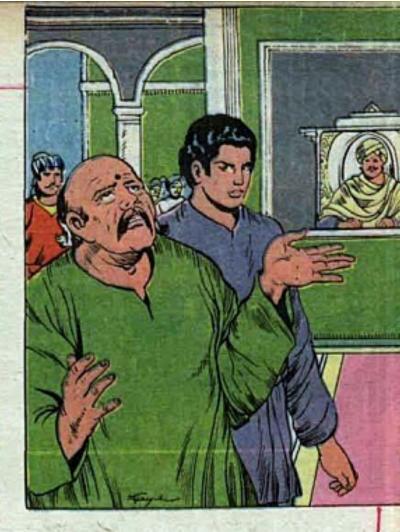
कोतवाल ने सिपाहियों को आदेश दे दिया कि दोनों को ही बन्दी बना लें। फिर बूढ़े और गिरिनाथ की ओर मुड़ कर बोला— "तुम दोनों में से ही एक डाकू है। कल सबेरे मैं इसका फैसला करूँगा।" यह कह कर वह अपने घर चला गया।

कोतवाल रास्ते भर यही सोचता रहा, दोनों में कौन डाकू है। यहाँ कि दिखाना खाते वक्त भी उसके चेहरे पर परेशानी के भाव थे। उसकी पत्नी ने उसकी परेशानी भाँप ली और उससे पूछा, "आखिर क्या बात है, आप इतने परेशान क्यों हैं!"

कोतवाल ने सारा किस्सा सुना कर कहा,

"मैं इतने वर्षों से नौकरी कर रहा हूँ, लेकिन आज तक कभी ऐसी घटना नहीं हुई जिसमें अपराधी का पता नहीं लग पाया हो !"

कोतवाल की पत्नी थोड़ी देर सोच कर बोली, "आप इसे बहुत बड़ी उलझन की गाँठ समझ कर भ्रम में पड़ गये हैं। मेरी बात मान कर ऐसा कीजिए।" यह कह कर उसने अपने पति के कान में कुछ कहा ।

कोतवाल ने दूसरे दिन थाने में पहुँचते ही गिरिनाथ को बुला कर उससे कहा, "मुझे सूचना मिली है कि जमींदार के घर को लूटने वाला डाकू माल सहित पकड़ा गया है, अब तुम जा सकते हो।" यह कह कर उसने बूढ़े का सन्दूक गिरिनाथ के हाथ में दे दिया ।

उस सन्दूक को देख कर वह युवक घबरा कर बोला, "हुजूर, यह सन्दूक मेरा नहीं है, इस बूढ़े का है। आप मुझे क्यों दे रहे हैं ? मैंने पहले भी आपसे निवेदन किया था ।"

कोतवाल इतना सुनते ही क्रोध से बोला, "गाड़ीवान की गवाही के अनुसार यह सन्दूक तुम्हारा है। जिसकी चीज़ है उसे उसी को सौंप देना हमारा कर्तव्य है ! अब तुम यह सन्दूक लेकर यहाँ से चले जाओ ।"

युवक ने परेशान होकर सोचा कि पहले थाने से बाहर चला जाये फिर तो यह सन्दूक उस-बूढ़े को वापस किया जा सकता है। यह सोच कर वह सन्दूक लेकर बाहर चला गया ।

गिरिनाथ के बाहर जाते ही कोतवाल ने बूढ़े को बुला कर कहा, "आप तो निर्दोष हैं। हमने गलती से आप पर सन्देह किया। हमें असली डाकू का पता लग गया है। मैंने वह सन्दूक उस युवक को देकर यहाँ से भेज दिया है, अब आप भी जा सकते हैं ।"

बूढ़ा इतना सुनते ही निराश हो गया। उसने सोचा, गिरिनाथ उसका सन्दूक गहनों सहित लेकर चला गया। लेकिन उसने निश्चय किया कि वह किसी थी हालत में उस नवयुवक को अपना सन्दूक नहीं ले जाने देगा ।

बूढ़ा उस युवक की खोज में चल दिया। अभी वह गली पार कर ही पाया था दि उसने देखा कि एक मकान के चबूतरे पर वह युवक सन्दूक सहित बैठा हुआ है। बूढ़ा तेजी से उस

युवक के पास पहुँचा और उसे डाँट कर बोला, "कम्बख्त ! दस हजार के गहने अकेले ही हड़प जाना चाहते हो ?"

गिरिनाथ बोला, "नहीं दादा, मैं तो आप के सन्दूक को आपको ही सौंपने के ख्याल से यहाँ बैठा हुआ हूँ। लेकिन एक बात नहीं समझ आ रही है कि कोतवाल साहब ने तो कहा था कि इस सन्दूक में जो गहने हैं वह चोरी के नहीं हैं। फिर आपने इस सन्दूक को अपना मानने से क्यों मना कर दिया ? चलिए, अच्छा हुआ आपका माल आपको मिल गया। अब हम दोनों के रास्ते अलग-अलग हैं। मुझे भी कोई नौकरी ढूँढनी है।" यह कह कर वह युवक चलने को हुआ।

इतने में पीछे से आकर कोतवाल बोला, "दिल के बीमार दादाजी थोड़ा रुक जाइये। इस सन्दूक में गहने नहीं हैं, सिर्फ़ पुराने कपड़े हैं।" और अपने पीछे आने वाले सिपाहियों को बूढ़े को दिखा कर बोला, "यह बूढ़ा मशहूर डाकू है और जो गहने बरामद हुए हैं वे जमींदार के घर से ही चुराये हुए हैं। इसको इसी समय ले जाकर जेल में डाल दो।"

यह खबर सुनते ही गिरिनाथ आश्चर्य चकित होकर बोला, "इसका मतलब है कि सच्चा चोर पकड़ा गया है। मुझे इस बात की खुशी है कि आपको मेरे निर्दोष होने का प्रमाण मिल गया।"

कोतवाल ने आगे बढ़कर उस युवक के कन्धे थप थपा कर कहा, "इस घटना से तुम्हारी निर्दोषिता का ही नहीं बल्कि तुम्हारी ईमानदारी का भी सबूत मिल गया है। तुम्हारी ईमानदारी देख कर तुमको मैं थाने में नौकरी देना चाहता हूँ। क्या तुम तैयार हो ?"

इतना सुनते ही गिरिनाथ बहुत प्रसन्न हो गया और बोला, "हुजूर इससे बढ़ कर मेरे लिए और क्या खुशी का बात हो सकती है ? आपने आज जो कुछ मेरे लिए किया है, उसे मैं जीवन भर याद रखूँगा। आपने मुझे एक झूठे इल्ज़ाम से बचाया, साथ ही मुझ बेकार को नौकरी दी। मैं आपकी इस कृपा के लिए अत्यन्त आभारी हूँ।"

अनोखी परीक्षा

श्रीपुर एक छोटा सा राज्य था। वहाँ के राजा विद्याधर के यहाँ सुदर्शन नाम का एक मंत्री था जो बहुत ही कुशाग्र बुद्धि और राजतंत्र में निपुण था।

श्रीपुर के पड़ोसी राज्य सैनिक दृष्टि से काफी शक्तिशाली थे फिर भी सुदर्शन की कुशाग्र बुद्धि और राजतंत्र में निपुणता देख कर बड़े राज्य कभी श्रीपुर पर आक्रमण करने की बात नहीं सोचते थे।

लेकिन समय के साथ-साथ सुदर्शन की आयु भी बढ़ती गयी। आखिर वह बूढ़ा हो गया। वह बहुत बीमार रहने लगा। दरबारी वैद्यों ने उसे सलाह दी कि अब वह मंत्री पद से अवकाश लेकर विश्राम करे।

यह समाचार सुनकर राजा विद्याधर ने मंत्री सुदर्शन को बुला कर कहा, "मंत्री महोदय, आपके स्वास्थ्य को देखते हुए ऐसा लगता है कि अब आपको आराम की विशेष आवश्यकता है। लेकिन आप अपने पद पर रहते हुए ही हमारे राज्य के लिए एक मंत्री का चुनाव कर दीजिए।"

सुदर्शन ने राजा की बात मान ली और मंत्री पद के योग्य व्यक्तियों के लिए सारे राज्य में ढिंढोरा पिटवा दिया। ढिंढोरा सुन कर कई शिक्षित व्यक्ति मंत्री से मिलने आये। उन्होंने सबकी परीक्षा ली और आखिर में समान स्तर के तीन व्यक्तियों का चयन किया। अब इन तीन व्यक्तियों में से एक व्यक्ति का मंत्री पद के लिए चुनाव करना था।

मंत्रीजी ने विनय, चंद्रकान्त और श्रीधर नाम के इन तीन व्यक्तियों का प्रस्ताव राजा के समक्ष रखा। और राज्य सभा के सभी सदस्यों को उन तीनों का परिचय कराया। सेवकों द्वारा उन तीनों को एक एक अत्यन्त कमजोर बिल्ली और उन बिल्लियों की देखभाल के लिए खजाने से प्रत्येक व्यक्ति को एक एक हजार सोने की मुद्राएं

बाल मुकुन्द गुप्त

दीं। और उनसे कहा, "तीन महीने बाद इन तीनों बिल्लियों को लेकर तुम तीनों दरबार में हाजिर हो जाना।"

तीन महीने बाद विनय, श्रीघर और चंद्रकान्त अपनी अपनी बिल्ली लेकर राज दरबार में आये।

विनय की बिल्ली अत्यन्त मोटी-ताजी व बलिष्ठ थी। उस बिल्ली को देख राज दरबार में उपस्थित लोगों ने सोचा, यह बिल्ली है या बाघ का बच्चा।

श्रीघर की बिल्ली भी स्वस्थ थी, लेकिन चंद्रकान्त की बिल्ली अत्यन्त कमजोर मरियल जैसी लगती थी।

राज्य मंत्री सुदर्शन ने तीनों से अपनी अपनी बिल्ली को पालने का तरीका विस्तारपूर्वक बताने के लिए कहा।

सबसे पहले विनय ने कहा, "आपने मुझे जो एक हज़ार सोने की मुद्राएं दी थीं उनमें से अधिकांश हिस्सा खर्च करके मैं ने बिल्ली को दूध मिष्ठान्न, मक्खन वगैरह खिलाया। यह पाँच सौ सोने की मुद्राएं बच गईं जो आप ले लीजिए।"

इसके बाद श्रीघर बोला, "बिल्ली प्रकृति से मांसाहारी है इसलिए मैं इसे अपने एक ऐसे मित्र के यहाँ छोड़ दिया करता था, जिसके यहाँ ज़्यादा चूहे थे। लेकिन कभी-कभी यह सोच कर कि शायद इसे चूहे ना मिले हों मैं इसे प्रति दिन दूध भी पिला दिया करता था उसका खर्चा
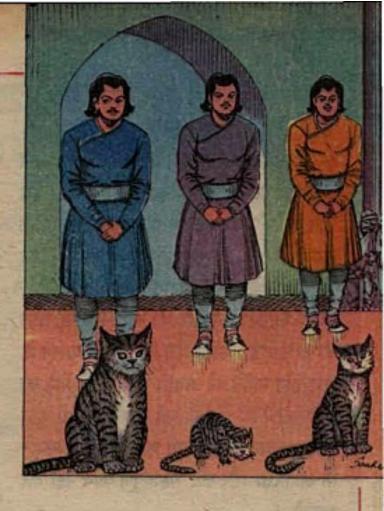
काट कर यह आपकी नौ सौ मुद्राएं मैं आपको वापस करता हूँ।"

अन्त में चंद्रकान्त ने बताया, "मैंने बिल्ली के वास्ते किसी भी विशेष आहार का प्रबन्ध नहीं किया। वह खुद ही यथाशक्ति अपने आहार का इन्तजाम करके मेरे ही घर पर रही। बिल्ली जैसे अनुपयोगी जानवर पर पैसा खर्च करना मुझे उचित नहीं प्रतीत हुआ। यह मैं आपकी पूरी एक हज़ार मुद्राएं वापिस करता हूँ इस धन से आप जनता के लिए कोई भी उपयोगी कार्य संपन्न कर सकते हैं।"

सभासदों ने सोचा कि मंत्री पद के लिए चंद्रकान्त का ही चुनाव होगा, लेकिन सुदर्शन राजा एवं अन्य सदस्यों से बोला "श्रीपुर के मंत्री

पद की योग्यता रखने वाला व्यक्ति श्रीधर ही है।"

यह निर्णय राजा विद्याधर एवं अन्य दरबारियों को आश्चर्य जनक प्रतीत हुआ। इस बात को भाँप कर सुदर्शन बोला, "आप सभी ने सुन लिया है कि इन तीनों व्यक्तियों ने इन बिल्लियों का कैसे पालन-पोषण किया है। विनय के अन्दर समय की गति सम्बन्धी ज्ञान का अभाव है। उसने एक बिल्ली को पालने के लिए तीन महीने की अवधि में पाँच सौ सोने की मुद्राएं खर्च की हैं। बिल्ली चाहे जैसी भी चुस्त और तन्दुरुस्त हो फिर भी वह चूहों को पकड़ने के अतिरिक्त और कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं कर सकती।

अब चंद्रकान्त की बात रही! इसके अन्दर विवेक से बढ़ कर लालच अधिक है। इसे नाम मात्र के लिए भी दया या सहानुभूति नहीं है। इन गुणों के अभाव में कोई व्यक्ति किसी राज्य के मंत्री के रूप में सफल नहीं हो सकता। बिल्ली जब कमजोर हो गई थी, भले ही वह इतनी उपयोगी नहीं थी लेकिन फिर भी उसकी कमजोरी को देखते हुए उसे पौष्टिक खाना मिलना चाहिए था।

इस परीक्षा में सौ प्रतिशत श्रीधर सफल निकला। क्योंकि उसने बिल्ली का सहज आहार चूहों को मानकर उसे अपने मित्र के घर छोड़ दिया। इस प्रकार बिल्ली की भूख तो मिटी ही, पर उस के साथ उसका मित्र भी चूहों के पिंड से छुटकारा पा गया। इसके अतिरिक्त बिल्ली के उत्तम स्वास्थ्य और भविष्य का ख्याल रखते हुए श्रीधर उसे एक समय दूध भी देता रहा!

इन सबको देखते हुए इस बात में कोई सन्देह नहीं रह गया कि एक मंत्री के लिए आवश्यक सहज लक्षण विवेक एवं समय की महत्वपूर्ण गति का ज्ञान पूर्ण रूप से श्रीधर के अन्दर विद्यमान हैं। इसीलिए मैंने इसी व्यक्ति को मंत्रीपद के लिए चुना है!"

मंत्री का निर्णय सुनकर सभी दरबारियों ने हर्ष व्यक्त करते हुए तालियाँ बजाईं।

२५

[राजा शिवसिंह का सैनिक दल चंद्रवर्मा को मांत्रिक समझ कर भ्रम में पड़ गया। चंद्रवर्मा ने बूढ़े के हाथ से काँसे के क़िले के मार्ग का नक़्शा ले लिया। इसके बाद वह राज सैनिकों के साथ रुद्रपुर पहुँचा। नागरिकों ने महामांत्रिक के रूप में चंद्रवर्मा का जय-जयकार किया। राज्य की ओर से उसका भव्य स्वागत किया गया। आगे पढ़िये----]

चंद्रवर्मा जब राजभवन के निकट पहुँचा, तो प्रवेश द्वार पर राजा शिवसिंह, मंत्री तथा राज्य के अधिकारियों ने आगे बढ़कर उसका भव्य स्वागत किया। राजा ने उसके निकट जाकर अत्यन्त स्नेहपूर्वक उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा, "चंद्रवर्मा, मैं समझता हूँ कि इतनी छोटी उम्र में आज तक कोई भी व्यक्ति इतना महान मांत्रिक नहीं बना है। मेरे राज्य की सीमा पर तुमने अपना निवास बनाया और हमारे लिए कंटक रूप उस पापी शंखु का घात किया, यह हमारे लिए और हमारी प्रजा के लिए अत्यन्त प्रसन्नता की बात है!"

राजा शिवसिंह के मुख से शंखु का नाम सुनकर चंद्रवर्मा को बड़ा आश्चर्य हुआ। पर बाहर से कुछ भी प्रकट किये बिना वह मुस्कराकर बोला, "मांत्रिक शंखु अत्यन्त पापी और घोर दुष्टात्मा था, इसीलिए मुझे उसे यमलोक पहुँचाना पड़ा। वह जनता को सताता

था, प्रजा व राज्य के लिए भी कांटा बना हुआ था ।"

"मांत्रिक शंखु के उस पर्वत पर इस समय तुम्हारा मित्र कालकेतु निवास कर रहा है । उसके द्वारा मैंने तुम्हारे बारे में सारी बातों की जानकारी प्राप्त की है । उसकी सलाह मानकर ही मैंने तुम्हें यहाँ आने का निमंत्रण दिया, ताकि तुम्हें काँसे के क़िले की यात्रा पर भेजकर मैं अपना सपना पूरा कर सकूँ । मेरा पूरा विश्वास है कि अनेक वर्षों का मेरा सपना तुम्हारे द्वारा सत्य साबित हो सकता है ! इस कार्य में तुम मेरे लिए सहयोग दोगे ने ?" राजा शिवसिंह ने कहा ।

"काँसे का क़िला ! यह कौन-सी बड़ी बात है ?" यह कह कर चंद्रवर्मा फिर मुस्करा उठा ।

इस बीच मंत्री ने राजा के कानों में कुछ कहा । राजा राजभवन के अतिथि-गृह की ओर बढ़ते हुए बोला, "चंद्रवर्मा, तुम दूर की यात्रा करके आये हो । थक गये होंगे । भोजन करके विश्राम करो । इसके बाद हम सारी बातें आराम से करेंगे ।"

चंद्रवर्मा के ठहरने के लिए उत्तम प्रबन्ध किया गया था । स्नान के बाद उसे अनेक प्रकार के व्यजंन परोसे गये । शयन के लिए रेशमी गद्देदार पलंग का प्रबन्ध किया गया । पर चंद्रवर्मा को बड़ी कोशिश के बाद भी नींद नहीं आयी । इस समय शंखु के पहाड़ पर निवास कर रहे कालकेतु और कापालिनी ने उसके बारे में राजा शिवसिंह से बहुत कुछ बता दिया है । कालकेतु ने राजा शिवसिंह से कहा है कि केवल चंद्रवर्मा ही काँसे के क़िले तक पहुँच सकता है ! कालकेतु की इस बात के पीछे क्या रहस्य हो सकता है ?

इस सम्बन्ध में चंद्रवर्मा थोड़ी देर गंभीरता पूर्वक सोचता रहा, फिर वह कालकेतु की योजना को समझ गया ।

कालकेतु चाहता है कि चंद्रवर्मा पुनः अपने राज्य पर अधिकार कर ले । इसके लिए सेना और सेना के संगठन के लिए धन की आवश्यकता है । यह धन उसे काँसे के क़िले से प्राप्त हो सकता है, इसीलिए कालकेतु ने राजा शिवसिंह को उसका परिचय दिया है ।

चंद्रवर्मा इन्हीं विचारों में डूबा हुआ था ।

तभी एक सेवक ने प्रवेश करके उसे बताया कि राजा और प्रधानमंत्री मंत्रणा-गृह में उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। चंद्रवर्मा ने अपने को संयत किया और मंत्रणा-गृह में पहुँचा ।

चंद्रवर्मा को देखते ही राजा शिवसिंह ने कहा, "चंद्रवर्मा, मुझे काँसे के क़िले में छिपे हुए धन का लालच नहीं है। मैंने यह उचित समझा कि इस बारे में तुम्हें पहले ही साफ़ बता दूँ।"

चंद्रवर्मा ने शिवसिंह की बात सुनकर सिर हिलाया, पर कोई जवाब नहीं दिया ।

राजा ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "फिर यह सवाल उठता है कि काँसे के क़िले के बारे में मेरे मन में ऐसी उत्सुकता का कारण क्या है ? इस बात का जो उत्तर मैं देने जा रहा हूँ, वह काफ़ी विचित्र-सा लग सकता है । लेकिन यह बात सत्य है ! तुम जानते हो न, काँसे का वह क़िला समुद्र के किनारे पर है !"

"हाँ, मैं जानता हूँ, वह पश्चिमी सागर के किनारे पर है और इधर एक हज़ार वर्ष से किसी ने भी उस क़िले को नहीं देखा है !" चंद्रवर्मा ने कहा ।

यह जवाब सुनकर मंत्री ने विस्मित होकर राजा की ओर देखा । राजा ने सिर हिलाकर कहा, "हो सकता है, न देखा हो। अच्छा, यह बताओ क्या यह बात सच है कि समुद्र का जल काँसे के क़िले की दीवारों का स्पर्श करता रहता है ?"

"मैंने ऐसा सुना तो है !" चंद्रवर्मा ने कहा।

"हमारे पूर्वजों का विश्वास है कि उस क़िले की दीवार के पार्श्व में जो समुद्र-तल है, उसके जल के अन्दर काँसे के बड़े-बड़े पात्र हैं और उन पात्रों में एक मांत्रिक ने कुछ अलौकिक प्राणियों को बंदी बना रखा है। मेरे पिता ने उन पात्रों को पाने का भरपूर प्रयत्न किया, पर कोई परिणाम नहीं निकला । तुम्हारा मित्र कालकेतु अपार शक्तिशाली है । वह स्वेच्छा से मानव तथा काल नाग का रूप धारण कर सकता है। उसने ही मेरे मन में यह आशा जगायी है कि काँसे के उन पात्रों को तुम ला सकते हो। वैसे मैं पूर्ण रूप से निराश हो चुका था, पर मेरे दिल के किसी कोने में आशा की रेखा आलोकित थी । जब कालकेतु ने तुम्हारा वृत्तान्त सुनाया

तब मेरे मन में यह विश्वास दृढ़ हो गया कि मेरी कामना की पूर्ति तुम्हारे द्वारा अवश्य हो जाएगी !" राजा शिवसिंह ने कहा ।

चंद्रवर्मा ने भाँप लिया कि राजा की बातों मे सच्चाई की कमी है । उन अलौकिक प्राणियों को प्राप्त करने के लिए कोई भी व्यक्ति इतना श्रम नहीं उठा सकता । बात केवल धन की है और राजा शिवसिंह के मन में उस धन को प्राप्त करने की लालसा है । वह स्वयं अपने प्रयत्न से उस धन को प्राप्त नहीं कर सकता । जब उसे पता लगा कि मुझे मंत्र-शक्तियाँ प्राप्त हैं तो उसने मेरी मदद चाही, ताकि वह धनराशि उसे प्राप्त हो सके ।

यदि काँसे के क़िले की वह धनराशि सचमुच मुझे प्राप्त हो जाती है तो मैं उसे शिवसिंह के हाथों में नहीं पड़ने दूँगा और धोखे का बदला धोखे से देकर स्वयं उस पर अधिकार करूँगा । ये सब केवल अपने स्वार्थ की बात ही सोचते हैं । मुझे भी भावुकता में न बह कर अपने लक्ष्य के प्रति सावधान रहना चाहिए ।

चंद्रवर्मा के भीतर विश्वास पैदा हुआ । उसने अपनी हथेली में दृष्टि गड़ाकर कहा, "महाराज, मेरे जैसा मांत्रिक ही इस श्रम साध्य कार्य को सिद्ध कर सकता है । मैं काँसे के क़िले में जाऊँगा । मेरे साथ एक छोटा-सा सैनिक-दल जायेगा । उसमें देवल नाम के एक युवक का होना अनिवार्य है ।"

राजा शिवसिंह और मंत्री ने फिर एक-दूसरे की आँखों में देखा । राजा ने एक क्षण को आँखें मूँदकर चंद्रवर्मा से कहा, "देवल का बूढ़ा पिता

जंगल में भटक रहा है। क्या तुम उससे मिल चुके हो ?"

"क्या कहा बूढ़ा ? कौन है वह ? ओहो, अच्छा !" यह कहकर चंद्रवर्मा ने अपनी हथेली की ओर और गहरी नज़र डालकर कहा, "मुझे याद आया। वह जंगल में एक झोंपड़ी में निवास करता है। उसके लिए सारी आवश्यक सुविधाएं प्रदान की जायें। अगर वह राजधानी में निवास की इच्छा प्रकट करे तो इसकी व्यवस्था की जाये। मेरा काँसे के क़िले तक पहुँचना बहुत कुछ उस बूढ़े पर तथा उसके पुत्र देवल पर निर्भर करता है !"

चंद्रवर्मा की बातें सुनकर राजा और मंत्री ने अपनी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। राजा ने केवल इतना कहा, "जैसा तुम चाहते हो, वैसा ही किया जायेगा। देवल को तुम अपने साथ ले जा सकते हो !"---- फिर एक क्षण रुककर पूछा, "क्या मैं सुरक्षा के लिए तुम्हारे साथ एक हज़ार सैनिकों को भेज दूँ ?"

राजा का यह प्रश्न सुनकर चंद्रवर्मा ज़ोर से हँस पड़ा और बोला, "मैं किसी के साथ युद्ध करने के लिए नहीं जा रहा हूँ। अगर मुझे युद्ध करना ही पड़ा तो वह युद्ध उन दुष्ट शक्तियों के साथ होगा जो अदृश्य रहकर मेरे कार्य में बाधा डालने की कोशिश करेंगी। इस संघर्ष में केवल मेरी मंत्र-शक्तियां ही सहायक हो सकती हैं, आपके सैनिक नहीं। मुझे केवल दस अनुचरों की आवश्यकता है जो खाद्य सामग्री ढोनेवाले खच्चरों के साथ रहेंगे। वे अनुचर केवल सैनिक ही हों, यह भी ज़रूरी नहीं है।"

सेवक सुबाहु किस दशा को प्राप्त हो गये हैं ?

थोड़ी देर चुप रहकर चंद्रवर्मा ने कहा, "महाराज, आप अपनी इच्छा के अनुसार व्यवस्था कीजिये ! कल सूर्योदय के समय मेरी यात्रा शुरू होगी। काँसे के क़िले में पहुँचने के लिए मुझे भयंकर जंगलों, पहाड़ों तथा रेगिस्तानों को पार करना पड़ेगा। खाद्य सामग्री को ढोने के लिए मुझे उन प्रदेशों में वहीं के पशुओं का उपयोग करना पड़ेगा। रेगिस्तानों में यात्रा करने के लिए मुझे ऊंटों की आवश्यकता भी पड़ सकती है। आपने अपनी राज्य-सीमा के मंडलाधीश जिन वीरमल्ल की बात कही, उन्हें यह संदेश भिजवा दीजिये कि हमारे लिए ये सारी व्यवस्थाएं कर दी जायें ।"

"इन व्यवस्थाओं के बारे में तुम्हें किसी प्रकार की कोई चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। सब हो जायेगा !" राजा शिवसिंह ने कहा ।

"ठीक है ! मैं अपने सेवकों में से दस विश्वास पात्र और साहसी व्यक्तियों का चुनाव करूँगा और उन्हें तुम्हारे साथ भेज दूँगा। उनके साथ पचास सैनिक और होंगे। जब तुम मेरे राज्य की सीमा पार करके पश्चिमी घाटियों में प्रवेश करने लगोगे तो उस प्रदेश का मंडलाधीश वीरमल्ल तुम्हें आवश्यक सहायता प्रदान करेगा। मैं अभी उस के पास खबर भेज देता हूँ। ताकि तुम्हें समय पर सहायता मिल सके ।" राजा ने कहा ।

वीरमल्ल का नाम सुनकर चंद्रवर्मा को अपने सेनापति धीरमल्ल का स्मरण हो आया। चंद्रवर्मा ने गहरी उसाँस लेकर सोचा कि पता नहीं कि धीरमल्ल तथा इतने ही विश्वासपात्र

सुबह हुई। कांसे के क़िले की दिशा में चंद्रवर्मा की यात्रा आरंभ होगयी । राजा शिवसिंह, मंत्रिमंडल, प्रमुख नागरिकों ने चंद्रवर्मा को विदाई दी ।

चंद्रवर्मा दल-बल के साथ आगे बढ़ा । उसके साथ मुख्य अनुचर के रूप में बूढ़े का पुत्र देवल भी था। उसे पिछली रात में कारागार से मुक्त कर दिया गया था ।

चंद्रवर्मा ने काफ़ी लंबा रास्ता जंगलों के बीच से पार किया। उसके हाथ में बूढ़े का दिया

हुआ नक्शा था, पर वह कांसे के क़िले के मार्ग को बताने में अधिक उपयोगी साबित नहीं हो रहा था ।

चंद्रवर्मा को घने जंगलों एवं ऊँचे पर्वतों के और कुछ नज़र नहीं आ रहा था । कहीं मनुष्य का संचार नहीं था । वह पश्चिमी दिशा में बढ़ रहा है या रास्ता भटक गया है, इसकी जानकारी के लिए केवल सूर्योदय एवं सूर्यास्त ही उसके लिए आधार थे ।

इसी तरह यात्रा करते-करते कई दिन निकल गये । एक दिन सूर्योदय के समय देवल एक ऊँची शिला पर चढ़ गया । सामने कुछ देखकर वह प्रसन्न हो उठा और तालियाँ बजाकर बोला, "लो देखो ! हम खंडहर पड़े किसी नगर में पहुँच गये हैं । मुझे तो लगता है कि यही काँसे का क़िला है !"

देवल की आवाज़ सुनकर चंद्रवर्मा और उसके साथ आये राजकर्मचारी दौड़कर देवल के समीप पहुँचे । देवल के हाथ के संकेत पर चंद्रवर्मा ने उस ओर निगाह दौड़ायी तो सामने पहाड़ की तलहटी में खंडहरों में अवस्थित एक नगर दिखाई दिया । उसकी इमारतें जर्जर हो चुकी थीं । गिरी हुई दीवारें, एक तरफ़ झुकी हुई छतें, बीच-बीच में उग आये झाड़-झंखाड़-कुल मिलाकर वह सारा इलाका एकदम निर्जन होने के कारण देखने में अत्यन्त भयानक लग रहा था ।

"यह काँसे का क़िला नहीं है, फिर भी यह

उचित होगा कि हम उन खंडहरों का निरीक्षण करें । शायद कोई काम की चीज़ मिल जाये !" चंद्रवर्मा ने कहा । वह देवल और अपने दल के साथ नीचे उतरा और खंडहरों की तरफ़ बढ़ने लगा ।

इसके बाद सब लोग उस उजड़े हुए नगर के निकट पहुँचे । जब वे एक मकान के खंडहर के सामने पहुँचे तो उन्हें वहाँ शेर के तीन बच्चे खेलते हुए दिखाई दिये । सामने अचानक आगये इतने लोगों को देखकर उन तीनों सिंहशावकों ने छलांग लगायी और वे शिलाओं की ओट में भाग गये । तभी एक शेर की दहाड़ से वह सारा इलाका काँप उठा ।

उस गर्जन को सुनकर चंद्रवर्मा रुक गया

और उसने अपने अनुचरों को आदेश देते हुए कहा, "इस इमारत की तरफ़ बढ़ने में हमारी ख़ैरियत नहीं है। हमें दूसरी दिशा से आगे बढ़ना चाहिए !"

सब लोग दूसरी दिशा से आगे बढ़े। खंडहर बना वह नगर लगभग तीस कोस के क्षेत्रफल में फैला हुआ था। वे उसके खंडहरों में भटकते रहे, पर उन्हें कहीं भी मनुष्य की छाया दिखाई नहीं दी। उस नगर की हर इमारत खंडहर का रूप थी। कुछ मकान जलकर ऐसे लग रहे थे, मानो उन पर काला रंग पोत दिया गया हो। कभी वहाँ मनुष्य रहते होंगे, लेकिन इस समय तो वहाँ जंगली सुअर, चमगादड़ और चीतों जैसे जानवरों का निवास था।

चंद्रवर्मा घूमता हुआ नगर के मध्यभाग की एक टूटी हुई इमारत के बीच पहुँचा। वहाँ एक ऊँचा शिलालेख था। उसके अक्षर साफ़ नज़र नहीं आ रहे थे। चंद्रवर्मा उसके नज़दीक गया और आँखें गड़ाकर उसका एक-एक अक्षर जोड़कर पढ़ने लगा। उसने पूरा शिलालेख पढ़ डाला। उसमें अंकित विषय इस प्रकार थाः

"यह करवीरपुर है। यह नगर एक हज़ार वर्ष तक सब प्रकार की सम्पदाओं से पूर्ण होने के कारण यशस्वी था। तब उत्तर दिशा से आयी बर्बर जातियों ने इसे लूटा और इसकी सारी सम्पत्ति को अपनी राजधानी कांसे के क़िले में पहुँचा दिया।"

चंद्रवर्मा ने इस शिलालेख को पढ़ने के बाद अपने अनुचरों की ओर मुड़कर देखा और उच्च स्वर में कहा, "अब यह ठीक नहीं होगा कि हम अपना समय यहां बर्बाद करें। इस खंडहर पड़े नगर में पत्थर एवं चट्टानों के सिवाय और कुछ नहीं है। यह काँसे का क़िला नहीं है। अब हम यहाँ से प्रस्थान करेंगे। सब लोग तैयार हो जाओ !"

सब लोगों ने अपने वाहनों को तैयार किया और पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख हो चंद्रवर्मा के पीछे-पीछे चल पड़े।

(क्रमशः)

प्रमाण

दृढ़व्रती विक्रमार्क उस भयानक रात्रि में वृक्ष के पास लौट आये। वृक्ष से शव उतार कर कंधे पर डाला और सदा की भाँति चुपचाप श्मशान की तरफ़ चलने लगे। उस समय शव में वास करने वाले बेताल ने पूछा, "राजन्, मेरे मन में यह शंका है कि आपको इतने कठिन एवं श्रमसाध्य कार्य में प्रवृत्त करनेवाला व्यक्ति कोई गुरु, भक्त या योगी होना चाहिए। ऐसे लोग अपनी वाक् चातुरी और क्षमता से समझदार लोगों को भी विरुद्ध मार्ग में प्रवृत्त करा देते हैं। मैं आपको ऐसे ही एक योगी के द्वारा शिकार बने पूर्णचंद्र नामक व्यक्ति की कठिन परीक्षा की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनिये।"

बेताल कहानी सुनाने लगाः

पूर्णचंद्र रामचंद्रपुर गाँव में रहता था। उसके हृदय में ईश्वर के प्रति जरा भी विश्वास नहीं था। एक बार उस गाँव में एक योगी आया। उसने

बेताल कथा
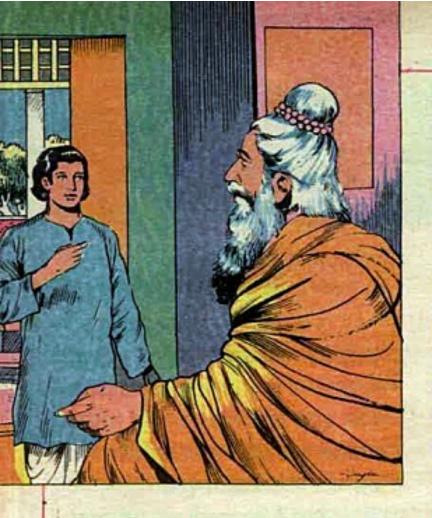
कहा कि भगवान में भक्ति-भावना रखने से सब प्रकार के प्रयोजन सिद्ध हो सकते हैं। जब सभा भंग हुई तो पूर्णचंद्र एकान्त में योगी के पास गया और बोला, "महात्मन्, आपने भगवान की भक्ति के बारे में अनेक उपदेश दिये। मैं वास्तव में यह जानना चाहता हूँ कि भगवान के अस्तित्व का प्रमाण ही क्या है ?"

"वत्स, तुम्हारे चारों तरफ़ विस्तृत यह जगत ही भगवान के अस्तित्व का प्रमाण है।" योगी ने उत्तर दिया।

"लेकिन भगवान के अस्तित्व को स्वीकार न करने पर भी हवा का बहना बन्द नहीं होता, मानव-जीवन स्तम्भित नहीं होता, सूर्य निकलता ही है, दिन और रात होते ही हैं। इसलिए भगवान के अस्तित्व के लिए और किसी विशेष प्रकार का प्रमाण दीजिए। केवल विश्वास काफी नहीं है। 'भगवान है' इस बारे में भगवान का ही कोई विशेष प्रयोजन होना चाहिए।" पूर्णचंद्र ने अपनी जिज्ञासा प्रकट की।

योगी ने पूर्णचंद्र की शंका को समझ लिया। दवा बीमारी का निवारण करती है। अन्न भूख मिटाता है। शास्त्र सृष्टि के रहस्यों का परिचय देता है। इन कार्यों को मनुष्य अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से संपन्न करता है। मनुष्य के विश्वास से इनका कोई सम्बन्ध नहीं है। भगवान के विषय में मान्यता दूसरी है। भक्त लोग अपने विश्वास के बल पर यह कहते हैं कि भगवान है। अन्य लोग भी ऐसा ही स्वीकार कर लेते हैं। पर इसके लिए कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है।

योगी ने क्षण भर मौन रहकर कहा, "तुम्हें प्रमाण ही चाहिए न ? तुम निर्मल हृदय से भगवान से किसी वस्तु की कामना करो ! वह कामना पूरी हो जायेगी। तब तो तुम भगवान में विश्वास करोगे ?"

"मेरे मन में कोई कामना नहीं है। अगर होगी भी तो मैं कठिन श्रम करके उसे पूरी कर लूँगा।" पूर्णचंद्र ने उत्तर दिया।

"एक वर्ष बाद मैं फिर इस गाँव में आऊँगा। मैंने जो कहा है, तुम बस उतना ही करना। तुम्हें प्रमाण मिल जायेगा।" योगी ने समझाया।

योगी के चले जाने के बाद भी पूर्णचंद्र ने उनके उपदेश पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने

अपने मन में यही समझा कि योगी ने उसकी शंका का उचित समाधान नहीं किया है ।

एक बार रामचंद्रपुर में एक अमीर आदमी बीमार पड़ा । बहुत तरह का इलाज हुआ, लेकिन बीमारी ने उसका पिंड न छोड़ा । ज्योतिषी बुलाये गये, जन्मकुंडली की जाँच हुई । एक बड़े विद्वान ज्योतिषी ने बताया, "यह बीमारी औषधियों के सेवन से स्वस्थ होनेवाली नहीं है । इसका एकमात्र उपाय यह है कि एक नास्तिक मन्दिर में प्रवेश कर भगवान से निर्मल हृदय से यह प्रार्थना करे कि रोगी को स्वास्थ्य-लाभ हो । भगवान निश्चय ही इसे निरोग कर देंगे ।"

रामचंद्रपुर में पूर्णचंद्र ही ऐसा व्यक्ति था जो नास्तिक था । ज्योतिषी की बात सुनकर उस अमीर आदमी के कुछ रिश्तेदार पूर्णचंद्र के घर पहुँचे । उससे निवेदन किया कि वह ज्योतिषी के बताये अनुसार इस कार्य को संपन्न कर दे ।

पूर्णचंद्र को बड़ा विस्मय हुआ । उसके मन में यह शंका हुई क्योंकि वह मन्दिर में कभी प्रवेश नहीं करता है और न तो भगवान में विश्वास रखता है, इसीलिए शायद उसके मन्दिर-प्रवेश की योजना बनायी गयी है । अगर यह भगवान की इच्छा है तो इस बात की सत्यता की परीक्षा लेनी चाहिए । उसने मन्दिर में जाने का निश्चय कर लिया ।

उस अमीर आदमी के प्राणों की रक्षा का प्रयोजन लेकर पूर्णचंद्र ने मन्दिर में प्रवेश किया । उसने बड़ी श्रद्धापूर्वक भगवान की प्रतिमा की ओर देखा और विश्वास भरे हृदय से प्रार्थना की "भगवान्, आप इस रोगग्रस्त मनुष्य को निरोग कीजिए और इसकी प्राण-रक्षा कीजिए !"
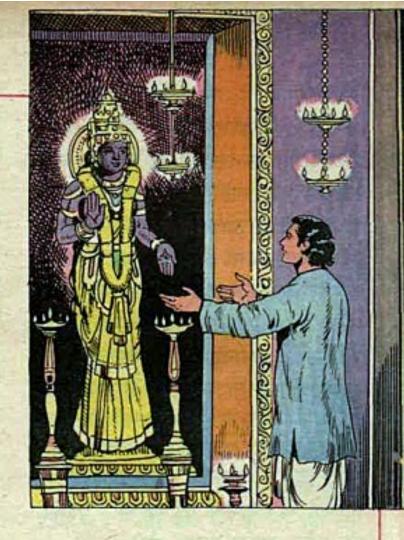
अगले दिन उस आदमी का रोग इस प्रकार दूर होगया, मानो कोई जादू हो गया हो । पूर्णचंद्र ने यह सब देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ । उसके मन में एक और गहरी शंका ने प्रवेश किया— 'यदि प्रार्थना के द्वारा भगवान सुख प्रदान कर सकते हैं तो इस विश्व में ये सारी समस्याएं क्यों बनी हुई हैं ?"

पूर्णचंद्र ने शंकित मन होकर सोचा कि इस अमीर आदमी के स्वस्थ हो जाने में भगवान के अस्तित्व का कोई सम्बन्ध नहीं है । यह केवल

एक संयोग मात्र है। पर उसका हृदय इस निर्णय से भी शांत नहीं हो सका।

इधर पूरे रामचंद्रपुर में यह समाचार आग की तरह फैल गया कि पूर्णचंद्र की प्रार्थना ने एक आदमी को स्वस्थ कर दिया है। दूर-दूर से लोग पूर्णचंद्र के घर आने लगे। उन लोगों की समस्याएँ सुनकर पूर्णचंद्र का हृदय व्याकुल हो उठा। उफ ! इस जगत में कितने दुख, कितने संकट हैं। उसकी प्रार्थना क्या इन सारी समस्याओं को हल कर सकती है ? उसे कई बार अपनी प्रार्थना पर ही विश्वास नहीं होता था। फिर भी, वह हर बार मंदिर में जाता था और निर्मल हृदय से भगवान से प्रार्थना करता था कि वे लोगों की समस्याओं को हल करें। पूर्णचंद्र की प्रत्येक प्रार्थना सफल होती।

पूर्णचंद्र का यश धीरे-धीरे चारों तरफ़ फैल गया। लोग प्रति दिन तीर्थयात्रियों की भाँति उसके घर आते। पूर्णचंद्र सबकी समस्याओं को ध्यान से सुनता। जब उसे यह विश्वास हो जाता कि अमुक समस्या का हल मनुष्य के हाथ में नहीं है, तभी वह मन्दिर में जाकर भगवान से प्रार्थना करता। बाकी लोगों को वह उनके कर्तव्य का बोध कराता और कर्मठ होने का उपदेश देता। कुछ दिन इसी तरह बीत गये। एक दिन पूर्णचंद्र की पत्नी रेणुका ने अपने पति से कहा, "भगवान से प्रार्थना करके तुमने सैकड़ों लोगों की समस्याएं हल की हैं। जब तुम्हारी प्रार्थना में इतनी शक्ति है तो तुम मेरी कामना को भी पूर्ण करो !"

"तुम्हारी कामना क्या है ?" पूर्णचंद्र ने पूछा।
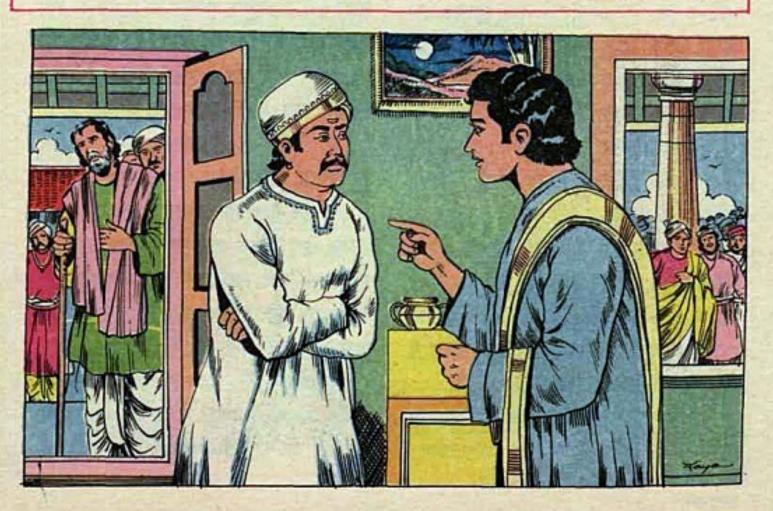
"मैं चाहती हूँ तुम इस देश के राजा बनो ! मैं रानी बनना चाहती हूँ !" रेणुका ने कहा ।

पत्नी की बात सुनकर पूर्णचंद्र असमंजस में पड़ गया । पहले तो उसने सोचा कि ऐसी कामना के लिए प्रार्थना करना उचित नहीं है । फिर उसे लगा कि भगवान के अस्तित्व का प्रमाण इसी कामना से मिल सकता है ।

पूर्णचंद्र तत्काल उठा और मन्दिर के लिए चल पड़ा । वहाँ भगवान की मूर्ति के सामने खड़े होकर उसने प्रार्थना की, "आज से ठीक एक सप्ताह के अन्दर मैं इस देश का राजा बनना चाहता हूँ । इस समय इस देश के जो राजा हैं, मैं उनसे कहीं अच्छा शासन करूँगा । मैं जनता की सारी समस्याओं को हल करूँगा ।"

इसके बाद पूर्णचंद्र मन्दिर से बाहर निकला । एक हफ़्ता भी बीत गया, लेकिन उसकी प्रार्थना सफल नहीं हुई ।

"शायद हमारी कामना बहुत बड़ी थी, इसीलिए तुम्हारी प्रार्थना सफल नहीं हुई । इस बार तुम यह प्रार्थना करो कि हम धनवान हो जायें ।" रेणुका ने पति से कहा ।

पूर्णचंद्र ने पत्नी की सलाह मान यह प्रार्थना भी की, पर उसे कोई सफलता न मिल सकी ।

अब रेणुका ने पूर्णचंद्र को स्वार्थ सिद्धि के लिए उकसाते हुए कहा, "तुम दूसरों के कल्याण के लिए प्रार्थना करते हो और सब की समस्याओं का समाधान करते हो । यह तुम्हारा अधिकार है कि तुम उन लोगों से कुछ शुल्क लिया करो । और कुछ नहीं तो हम इसी तरह कुछ पैसा प्राप्त कर लेंगे ।"
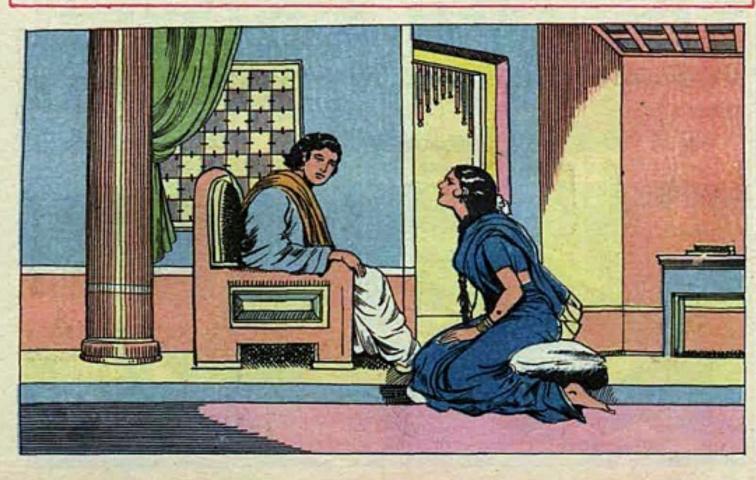
पूर्णचंद्र ने ऐसा ही किया। इसका परिणाम यह निकला कि उस दिन से उसकी प्रार्थनाएं विफल होने लगीं। धीरे-धीरे उसके पास आनेवालों की संख्या कम होती चली गयी।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा, "राजन्, आपको इस बारे में तो कोई सन्देह नहीं है न, कि पूर्णचंद्र की प्रार्थनाओं से लोगों की जो समस्याएँ हल हुईं, वे संयोग से ही हुई हैं। अगर ऐसा न होता तो उस देश का राजा बनने की उसकी प्रार्थना भी अवश्य सफल हुई होती। इतना ही नहीं, इसके बाद की भी उसकी सारी प्रार्थनाएँ विफल हो गयीं। क्या आप यह नहीं मानते कि योगी ने भगवान के अस्तित्व का प्रमाण प्रस्तुत करने का आश्वासन देकर पूर्णचंद्र को गलत रास्ते पर डाल दिया? इससे तो वह पहले ही अच्छा था। यह बात सच है या नहीं? अगर आप इसका समाधान जानकर भी न देंगे तो आपका सिर फूटकर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।"

उत्तर में विक्रमार्क ने कहा, "प्रारंभ में पूर्णचंद्र ने मन्दिर में प्रार्थनाएँ करके जो फल प्राप्त किये, वे केवल संयोग नहीं हैं, बल्कि सचमुच ही उसकी प्रार्थनाएँ फलीभूत हुई थीं। लेकिन जब उसने अपनी पत्नी के कहने से स्वार्थ-प्रेरित होकर राजा बनने की कामना लेकर प्रार्थना की, तब से उसकी प्रार्थनाओं का कोई मूल्य नहीं रह गया और वे निष्फल होने लगीं। भगवान की कृपा और महिमा विश्वास के प्रमाण के लिए होती हैं, स्वार्थसिद्धि के लिए नहीं। जो व्यक्ति स्वार्थ के लिए प्रार्थना करता है, भगवान उसकी सहायता नहीं करते। पूर्णचंद्र ने निस्वार्थभाव से भगवान से जो भी प्रार्थना की, वह पूरी हुई। योगी भगवान के अस्तित्व के प्रमाण के लिए यही उपदेश देना चाहते थे। इसलिए यह कहना उचित न होगा कि योगी ने पूर्णचंद्र को गलत रास्ते पर लगाया।"

राजा विक्रमार्क के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य होकर फिर पेड़ पर जा बैठा।

(कल्पित)

सेर का सवा सेर

जोतपुर गाँव में पटवारी भीमराज का नाम सुनते ही सब लोग थर-थर काँप उठते थे। बड़े-बड़े कर्मचारी और अफ़सर भी उसके नाम से घबरा उठते थे।

एक बार जोतपुर में रामदीन नाम का एक प्रसिद्ध ज्योतिषी आया। रामदीन ने गाँव के सभी प्रमुख लोगों की जन्म कुंडलियाँ और हस्तरेखाएँ देखीं और उनके फल बताये। सबने सन्तुष्ट होकर रामदीन ज्योतिषी को थोड़ा-थोड़ा धन दिया। अंत में वह भीमराज पटवारी के घर पहुँचा। पटवारी चबूतरे पर बैठकर हिसाब लिख रहा था। ज्योतिषी ने वहाँ पहुँचकर पटवारी को नमस्कार किया।

"आइये, पधारिये!" भीमराज ने अपने हाथ की क़लम नीचे रखते हुए कहा। कुशल प्रश्नों के बाद ज्योतिषी ने पटवारी का हाथ अपने हाथ में लेकर ध्यान से उसे देखा, फिर कहा, "आपकी हस्तरेखाएँ तो अद्भुत हैं। शनि ने सातवें ग्रह में प्रवेश किया है। इसी के फल स्वरूप आप इस पद पर पहुँचे हैं। वैसे आपकी जन्मकुंडली तो सर्वोच्च पद पाने लायक़ है। यही कारण है कि आप इस गाँव के मुकुट विहीन महाराजा बन गये हैं।"

जब रामदीन ज्योतिषी ने पटवारी की हस्तरेखाएँ और जन्मकुंडली देख लीं तो पटवारी भीमराज ने ज्योतिषी से पूछा, "हस्तरेखाएँ एवं जन्मकुंडली देखने का आपका क्या शुल्क है?"

"कोई निश्चित राशि तो नहीं है। लोग अपनी खुशी से दिल खोलकर दे देते हैं। साधारण से साधारण व्यक्ति ने भी चार रुपये से कम नहीं दिये हैं, फिर आप तो इस गाँव के मालिक हैं! धर्मात्मा हैं! आपके साथ मैं सौदाबाजी कैसे कर सकता हूँ?" ज्योतिषी ने जवाब दिया।

"इस गाँव में पटेल, शूरसिंह, तेजसिंह, शर्दूलसिंह आदि अनेक प्रमुख लोग हैं। उनके

२५ वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

दर्शन क्यों नहीं करते ?" पटवारी भीमराज ने सुझाया ।

"क्षमा कीजिये ! मैं उन सबके घर हो आया हूँ। उन सबके घर रास्ते में ही पड़ते थे, इसलिए मैं उन सबसे मिले बिना कैसे आ सकता था ?" रामदीन बोला ।

"सबसे कितना रुपया वसूल हुआ ?" भीमराज ने पूछा ।

"महाशय, मैं इधर बीस-तीस दिनों से आसपास के गाँवों में ही चक्कर काट रहा हूँ। वास्तव में ये सारे गाँव लक्ष्मीदेवी के निवास हैं, खूब सम्पन्न हैं। हमारे जोतपुर गाँव के लोग तो और भी उदार हैं। विद्याओं का आदर करते हैं और खूब खुलकर दान देते हैं।" ज्योतिषी ने कहा ।

"आपको अधिक धन की प्राप्ति हो तो हमें भी बहुत खुशी होगी। आप हमारे गाँव में आये हैं। आप जैसे पंडित को प्रोत्साहन देना हमारा कर्त्तव्य है ।" पटवारी ने कहा ।

पटवारी की बातें सुनकर ज्योतिषी फूला न समाया। बोला, "आप जैसे शुभचिन्तक से क्या छिपाऊँ ? मुझे दो सौ रुपये प्राप्त हुए हैं ।"

रामदीन ज्योतिषी की बात सुनकर भीमराज पटवारी मुस्कराकर बोला, "वाह, अभी तक आपने यह बात क्यों नहीं बतायी ? आपने जो राशि बतायी है, उसके अनुसार एक रुपये पर पाँच पैसे के हिसाब से दस रुपया शुल्क पटवारी का बनता है। पहले आप वह जमा कर दीजिये ! गाँव में जो भी वसूली होती है, उसका पाँच प्रतिशत पटवारी के पास जमा करना पड़ता है, यह बात गाँव का बच्चा-बच्चा जानता है। आप इन दस रुपयों में से चार रुपये अपने शुल्क के काट लीजिये और छह रुपये जमा कर दीजिये ! बस, बात ख़त्म !"

पटवारी की बात सुनकर ज्योतिषी चकित रह गया। उसने सोचा कि अगर वह कुछ और देर पटवारी के पास ठहर गया तो न मालूम और कौनसा नुक़सान सहन करना पड़ेगा । उसने चुपचाप अपनी पोटली उठायी और पटवारी के पास छह रुपये जमा करके वहाँ से चला गया।

हमारे मन्दिर
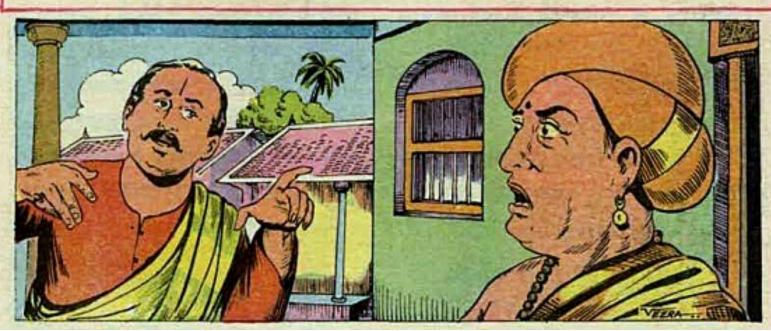
कोणार्क

जिस स्थल पर चंद्रभागा नदी समुद्र से मिलती है, वहीं पर सूर्य-मन्दिर निर्मित है। यह सारे देश में प्रसिद्ध है। पुराणों का कहना है कि श्रीकृष्ण के पुत्र शांब ने यहाँ दीर्घकाल तक सूर्य की उपासना की थी।

१३ वीं सदी में कलिंग राज्य पर राजा नरसिंह देव का शासन था। उन्होंने यहाँ पर सूर्य-मन्दिर के निर्माण का संकल्प किया। इस कार्य के लिए उन्होंने अपने राज्य से बारह हज़ार शिल्पियों को बुलाया और विष्णु मोहराणा के नेतृत्व में मन्दिर के निर्माण का कार्य प्रारंभ किया। दूर-दूर के प्रदेशों से विशाल चट्टानें वहाँ पहुँचायी गयीं। मंदिर का निर्माण निर्णीत अवधि में पूरा करने के लिए शिल्पी दिन-रात श्रम करने लगे।
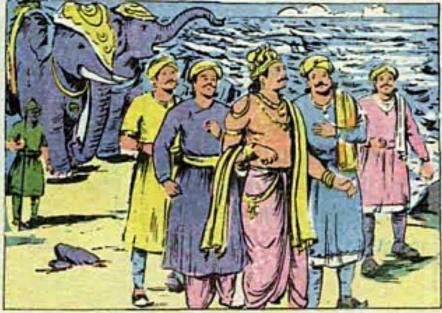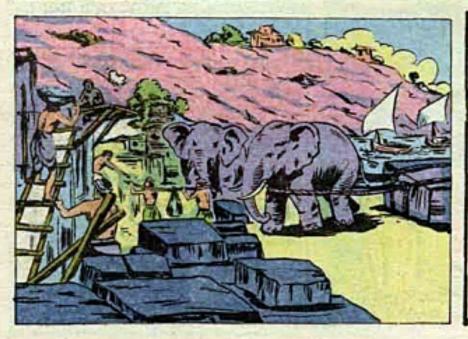
सूर्य भगवान के रथ को विशाल चक्रों पर निर्मित किया गया और उसमें दीर्घकाय, जुते हुए अश्वों की मूर्तियां बनायी गयीं। इसी आकार में मन्दिर के निर्माण को पूरा कियां गया। मन्दिर का सम्मुख भाग ईशान दिशा में निर्मित हुआ ताकि सूर्य की किरणें मन्दिर में प्रकीर्ण हो सकें।
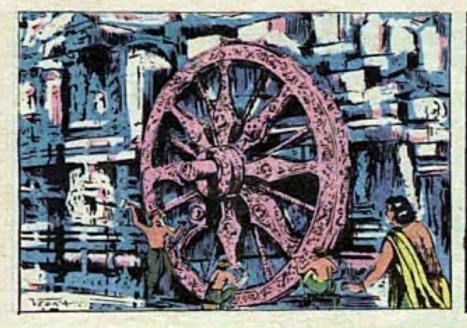
शिल्पियों में प्रमुख विष्णु मोहराणा के एक धर्मपाद नाम का पुत्र था। वह पिता की अनुपस्थिति में अपनी माता के साथ गाँव में रहकर पिता के ताड़-पत्र ग्रन्थों के अध्ययन में लगा हुआ था। एक दिन धर्मपाद अपने पिता को देखने का संकल्प लेकर माता की अनुमति प्राप्त कर कोणार्क की ओर चल पड़ा।

पदयात्रा करके धर्मपाद एक दिन कोणार्क पहुँच गया। विष्णु मोहराणा पुत्र को देखते ही आनन्द-विह्वल हो उठे और उन्होंने उसका आलिंगन किया। पिता के निर्देशन में निर्मित कोणार्क मन्दिर के उस शिल्प को देखकर धर्मपाद आनन्द से भर गया।

मंदिर का निर्माण समाप्त होगया था। इसके बावजूद किसी के मुँह पर प्रसन्नता नहीं थी, बल्कि सब चिन्ताग्रस्त थे। यह देख धर्मपाद ने इसका कारण पूछा। उन्होंने धर्मपाद से कहा कि गोपुर के शिखर को सम्यक् रूप से जोड़ने की विधि जिस सूत्र में वर्णित है, उस सूत्र को वे भूल गये हैं। यही उनकी चिन्ता का कारण है।

मंदिर के निर्माण की पूर्ति में अब विलम्ब होते देख राजा अपनी सहनशीलता खो बैठे। उन्होंने शिल्पियों को चेतावनी देते हुए कहा, "अगर कल प्रातःकाल तक गोपुर का शिखर पूरा नहीं हुआ तो सबको प्राण दंड दिया जायेगा।"

धर्मपाद मंदिर के शिखर पर चढ़ गया और उसने शिल्प-रचना को बारीकी से देखा। वह समझ गया कि गोपुर के कलश को किस तरह बैठाना है। उसने उस सूत्र के अनुसार शिल्पियों को समझा दिया।

धर्मपाद की योग्यता की सबने प्रशंसा की। अपने पुत्र के ज्ञान पर विष्णु मोहराणा परम आनन्दित हुआ। पर कुछ ईर्ष्यालु शिल्पी एक किशोर वय के बालक की यह प्रशंसा सहन नहीं कर पाये। वे आपस में कानाफूसी करने लगे कि जो कार्य बारह हज़ार शिल्पी नहीं कर पाये, उसे यह कैसे संपन्न कर सकता है।
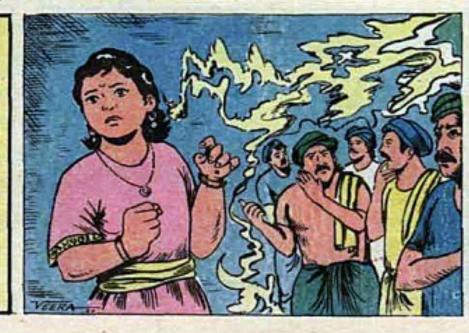
धर्मपाद मन में विचार करने लगा कि अगर वह सदा के लिए अनुपस्थित हो जाये तो किसी के मन में यह द्वेष न रहेगा कि मंदिर का कलश एक किशोर ने रखा है। वह मन में कुछ संकल्प कर आधी रात के समय गोपुर पर पहुँचा। पूर्णिमा का चाँद आकाश में चमक रहा था। धर्मपाद गोपुर से समुद्र में कूद पड़ा और उसने अपने प्राणों की आहुति से चारों तरफ़ उठ रही द्वेष की ज्वालाओं को शांत किया।

कई शताब्दियाँ बीतीं, धर्मपाद का कौशल और त्याग इतिहास में सदा के लिए अमर हो गया। इस समय प्रमुख मंदिर विद्यमान नहीं है, फिर भी मुखशाला की दीवारों पर अंकित सूर्य भगवान का अद्भुत शिल्प आज भी दर्शकों को आनन्द प्रदान करता है।
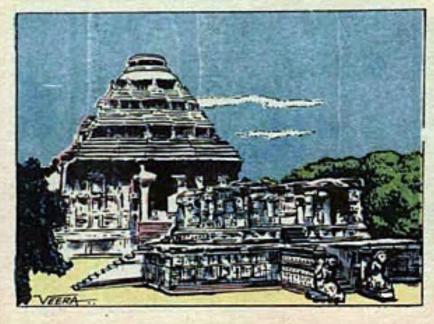
कोणार्क की मुखशाला की दीवारों पर अंकित सुन्दर प्रतिमाएँ शिल्पकला का उत्कृष्ट नमूना हैं। इस समय चंद्रभागा नदी एवं समुद्र मंदिर से दूर हैं, फिर भी मंदिर का प्रदेश आज भी अत्यन्त प्रशान्त एवं गंभीर प्रभाव प्रस्तुत करता है।

असली धनी

गोवर्धन दास साधारण हैसियत का एक किसान था। उसने अपनी बेटी सरला के विवाह के खर्च के लिए अपनी दो एकड़ ज़मीन बेच दी। उसे कुल दस हज़ार रुपये मिले। वह राशि उसने अपने घर में एक सन्दूक़ में रख दी। गोवर्धनदास जब यह पैसा अपने सन्दूक़ में सुरक्षित रख रहा था, तब उसके दूर का एक रिश्तेदार शंभुनाथ भी घर में उपस्थित था। उसने गोवर्धन को रुपये रखते हुए देख लिया। जब गोवर्धन किसी काम से घर से बाहर गया और पत्नी सुलोचना घर के पिछवाड़े अपने कामों में लग गयी तो शंभुनाथ ने मौक़ा पाकर वे रुपये चुरा लिये और अपने घर की राह ली।

शंभुनाथ के भी शादी के योग्य एक लड़की थी। वह विवाह का खर्च नहीं जुटा पा रहा था, इसीलिए रिश्ता तय होने में देर हो रही थी। अचानक हाथ आये इस धन से शंभुनाथ का मन निश्चिन्त हो गया और वह उसी गाँव के एक संपन्न किसान सोमनाथ के पुत्र के साथ अपनी लड़की का रिश्ता तय करने के लिए घर से निकल पड़ा।

घर से बाहर जाने से पहले शंभुनाथ ने चोरी के उस धन को अटारी के पुराने सामानों के बीच छिपा दिया। शंभुनाथ का पुत्र मंगलनाथ यह सब देख रहा था। शंभुनाथ के हाथ में एक थैली है, यह बात भी मंगलनाथ से छिपी नहीं रही। पिता के घर से निकलते ही मंगलनाथ अटारी पर चढ़ गया और वह थैली निकाल ली। गाँव में ही उसके चार-पाँच मनचले दोस्त थे। वह धन की थैली कमर में खोंसकर उन दोस्तों की तरफ़ चल पड़ा।

मंगलनाथ अपनी मस्ती में गली से गुज़र रहा था। तभी रुपयों की थैली उसकी कमर से खिसक कर नीचे गिर गयी। मंगलनाथ को इसका आभास भी न मिला। थोड़ी देर में उस गाँव का साहूकार गाड़ी में माल लादे उसी गली

घनश्याम वर्मा
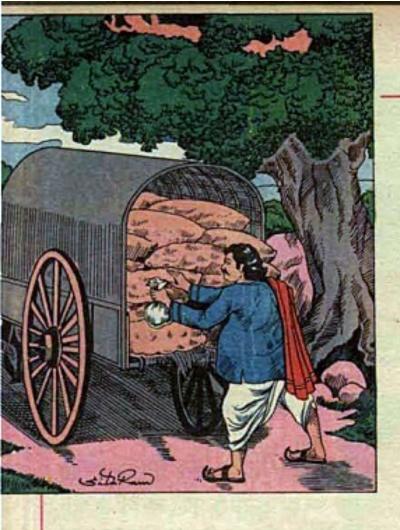
से होकर निकला। उसकी नज़र उस थैली पर पड़ी। उसने गाड़ी से उतर कर थैली ले ली। उसने उस थैली को गाड़ी में डाला और चढ़कर फिर गाड़ी हाँक दी। उसके मन में यह सन्देह हुआ कि थैली में निश्चित ही रुपये होने चाहिये, लेकिन उसने इस डर से थैली को खोलकर नहीं देखा कि कहीं थैली का मालिक उसकी खोज में उधर आ जाये और उसके हाथ में थैली देख ले।

साहूकार जल्दी ही अपनी दूकान के सामने पहुँच गया। जब वह गाड़ी से सामान उतरवा रहा था तो हड़बड़ी में उस थैली के बारे में भूल गया। थोड़ी देर बाद उसे थैली की याद आयी। उसने थैली की खोज की, पर माल के बोरों के बीच उसे वह थैली कहीं दिखाई न दी।

बात ऐसी हुई, जब साहूकार का नौकर माल को यथास्थान लगा रहा था, तब उसे थैली दिखाई दी। उसने सबकी आँख बचाकर उस थैली को अपने कपड़ों में छिपा लिया और जल्दी-जल्दी काम पूरा कर अपने घर चला गया घर में उसकी पत्नी ने थैली को खोलकर देखा तो वह इतना धन देखकर घबरा गयी, बोली, "अजी, सुनो ! अगर लोगों को यह मालूम हो गया कि हमारे पास इतना धन है तो हमारी जान जोखिम में पड़ जायेगी। कोई न कोई अवश्य इसे चुराने की कोशिश करेगा। क्यों न हम इसे घर के पिछवाड़े ज़मीन में गाड़ दें ?"

दोनों सहमत होकर पिछवाड़े में चले गये और गड्ढा खोदकर धन छिपाने लगे। तभी पड़ोसी जानकीराम की निगाह इन दोनों के इस कृत्य पर पड़ गयी। वह समझ गया कि हो न हो, थैली के अन्दर कोई बहुमूल्य वस्तु है। जब वे दोनों ज़मीन में थैली गाड़कर घर के अन्दर चले गये और दरवाज़ा बन्द कर सोने की तैयारी करने लगे, तब जानकीराम ने बिना किसी आहट के पिछवाड़े की दीवार फांदकर गड्ढे की मिट्टी हटायी और थैली लेकर अपने मकान के पिछवाड़े में उतर गया।

आधी रात का समय था। उसी समय एक चोर जानकीराम के घर में सेंध लगाने के लिए छिपा हुआ था। उसने देखा, जानकीराम पड़ोसी के मकान के पिछवाड़े से एक थैली लेकर दबे कदमों से अपने पिछवाड़े में उतरा है। वह

समझ गया कि यह आदमी भी उसी की तरह एक चोर है। चोरी के माल में हिस्सा माँगने के ख्याल से वह जानकीराम के पास पहुँचा। जानकीराम चोर को देखकर चिल्लाने ही वाला था कि उसे ख्याल आया कि उसके हाथ से थैली गिर गयी और वह झट घर के अन्दर भाग गया।

चोर ने थैली उठा ली और अपनी क़िस्मत पर खुश होता हुआ गली से भागने लगा। दुर्भाग्य से कुछ कुत्ते भूंकते हुए उसके पीछे लग गये। कुत्तों को भूँकता सुनकर पड़ोस के तमाम परिवार जाग उठे और दरवाज़ा खोलकर बाहर निकल आये चोर ने सड़क के किनारे थैली फेंकी और सिर पर पैर रखकर वहाँ से भाग गया। चोर को भागा हुआ जान बाकी लोग भी घरों के अन्दर चले गये।

उस गाँव में एक ज्योतिषी था। वह सुबह-सुबह उठकर नदी में नहाने जाया करता था। वह नहाकर घर लौट रहा था कि उसे सड़क के किनारे एक थैली पड़ी दिखाई दी। ज्योतिषी ने थैली अपने हाथ में ली। उसमें इतना धन देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ और बड़े उत्साह के साथ घर पहुँचा। उसके घर गाँव के कुछ लोग बैठे हुए थे। वे अपने बेटे के विवाह का लग्न निश्चित कराने के लिए आये थे।

ज्योतिषी ने उन लोगों को देखा तो अंगोछे के नीचे वह थैली छिपा दी और उस अंगोछे को झूले की पाटी पर रखकर वह घर के अन्दर चला गया। इसके बाद वह उन लोगों से बात करने के लिए बरामदे में बैठ गया।
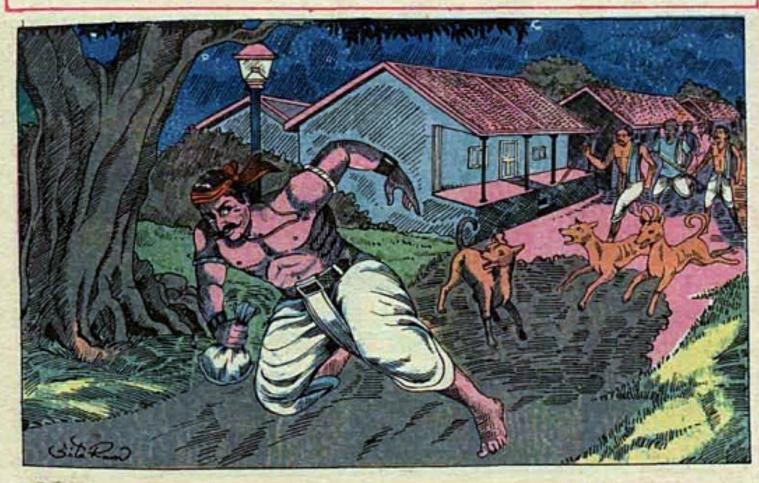
ज्योतिषी की पत्नी नदी के घाट पर कपड़े धोने के लिए निकल रही थी। उसने दूसरे कपड़ों के साथ झूले पर से अपने पति के अंगोछे को भी बाल्टी में डाल लिया। उसकी निगाह अंगोछे में लपेट कर री हुई थैली पर नहीं पड़ी।

ज्योतिषी की पत्नी जब नदी के घाट पर पहुँची, तब गोवर्धनदास की पत्नी भी वहाँ कपड़े धो रही थी। दोनों थोड़ी देर तक बात करती रहीं। दोनों ने कपड़े धोये और धुले हुए कपड़े बाल्टी में डालकर अपने-अपने घर की ओर चल दीं। फिर एक संयोग घटित हुआ। दोनों ने कुछ ही दिन पहले हाट से बाल्टियां ख़रीदी थीं, जो एक जैसी थीं। भूल से उनकी बाल्टियां बदल गयीं।

गोवर्धन की पत्नी घर लौटकर धुले हुए कपड़े सुखाने लगी। जब उसने सब कपड़े निकाल कर तार पर डाल दिये तो उसे बाल्टी में एक थैली दिखाई दी। उसने विस्मित होकर थैली को खोलकर देखा। उसमें रुपये भरे हुए थे। आँखें फाड़े वह रुपयों को ताकती रह गयी। तभी गोवर्धनदास उसके पास आया और बोला, "सुनो! कल शाम मैंने संदूक में रुपये रखे थे, दिखाई नहीं दे रहे, क्या तुमने देखे हैं?"

इन शब्दों को बोलने के साथ ही गोवर्धनदास ने अपनी पत्नी के हाथ में रुपयों की थैली देखी तो पूछा, "तुमने यह थैली किसलिए निकाली? मैं घंटे भर से इसे ढूंढ़ रहा हूँ।" यह कहकर उसने वह थैली अपने हाथ में ले ली।

गोवर्धनदास की पत्नी कुछ समझ न सकी कि रुपयों की थैली उसकी बाल्टी में कैसे आगयी? फिर यह सोचकर उसने अपना समाधान कर लिया कि शायद कपड़ों के साथ भूल से यह थैली भी उसके साथ चली गयी हो!

जो भी हो, गोवर्धनदास ही असली धनी था। उसके खोये हुए रुपये उसे फिर से प्राप्त हो गये और उसने अपनी पुत्री सरला का विवाह धूमधाम से संपन्न कर दिया।

शिव पुराण
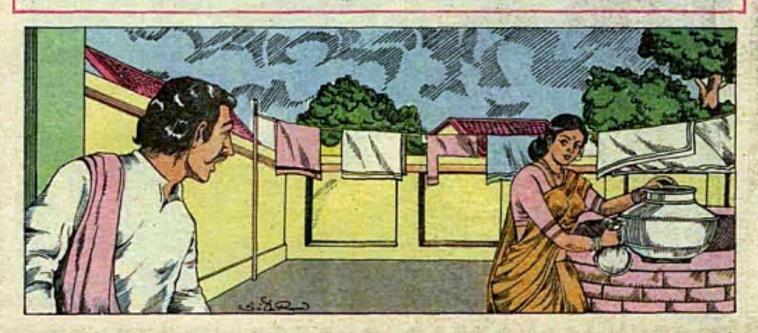
श्री विष्णु ने आदि शेष को आदेश देकर कहा, "शेष, हमें देवताओं की सहायता करनी है। तुम जाओ और मंदराचल को उखाड़कर उसे मथनी के रूप में क्षीरसागर में डाल दो।"

आदिशेष ने विष्णु भगवान की आज्ञा का पालन किया।

समुद्र-मंथन करने पर जो अमृत की प्राप्ति होगी, उसका थोड़ा-सा अंश क्षीरसागर को प्रदान किया जायेगा, यह निश्चय हुआ। लेकिन इस काम के लिए मंदराचल को जैसे ही क्षीरसागर में डाला गया, वह डूब गया। उसे उठाकर सीधा रखने के बाद ही देव और दानव समुद्र-मंथन का कार्य संपन्न कर सकते थे।

देवताओं ने अपनी समस्या विष्णु भगवान के सामने रखी और समाधान के लिए प्रार्थना की। विष्णु ने महाकूर्म रूप धारण कर मंदराचल को अपनी पीठ पर रखना स्वीकार कर लिया।

जब महाकूर्म की पीठ पर मंदराचल को रख दिया गया तो समुद्र को मथने के लिए रज्जू की आवश्यकता हुई। वासुकि ने रज्जू बनना स्वीकार कर लिया। इसके बाद देव-दानवों ने क्षीर सागर का मंथन आरंभ कर दिया। देवताओं ने वासुकि के शिरोभाग को पकड़ने की इच्छा प्रकट की, पर दानवों ने इसे स्वीकार नहीं किया। वे झगड़ा कर कहने लगे, "क्या हम लोग वासुकि की पूँछ पकड़ेंगे? यह नहीं हो सकता।" यह कहकर उन्होंने वासुकि का शिरोभाग पकड़ लिया और उसकी पूँछ देवताओं के हाथों में थमा दी।
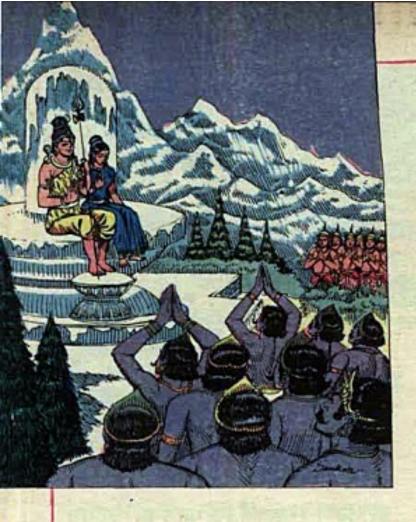
समुद्र-मंथन के समय वासुकि के मुख से आग की लपटें एवं धुआं निकलने लगा, इससे दानवों को कष्ट होने लगा, पर वे यह सारी यातना चुपचाप सहने लगे। इन लपटों और धुएँ का प्रभाव देवताओं पर भी हुआ, पर वह इतना कम था कि उन्हें विशेष पीड़ा नहीं हुई।

देवगण और दानवों ने दीर्घकाल तक क्षीरसागर का मंथन किया। उसमें से अमृत के स्थान पर हालाहल विष ऊपर आया और बड़े वेग से चारों तरफ़ फैलने लगा।

यह देख सब भयभीत होगये। कालकूट के नीले जाल से कैसे रक्षा हो, जब कोई उपाय समझ में नहीं आया तो वे दौड़कर कैलास-पर्वत पर पहुँचे। वहाँ पार्वती के साथ शिव विराजमान थे। सब देव-दानवगणों ने उनको प्रणिपात कर प्रार्थना की, "हे देवाधिदेव! कालकूट विष तीनों लोकों को जला रहा है। उससे हमारी रक्षा करें! सारे लोकों के महेश्वर आप हैं। आपका परम तेज ब्रह्मा, विष्णु एवं इंद्रादि के लिए भी अगम्य है। आप सबके त्राता हैं।"

उन सब की दीनदशा देखकर शिव दयार्द्र होगये। वे पार्वती से बोले, "देवि, देव-दानवों ने समुद्र-मंथन किया तो यह हालाहल विष बाहर निकल आया। इस विष की नील अग्नि ने तीनों लोकों को त्रस्त कर दिया है। मैं इस कालकूट विष का पान कर जगत को इसके प्रभाव से मुक्त किये देता हूँ।"

पार्वती ने स्वीकार किया।

शिव ने सारे लोकों में फैल रहे विष को एकत्रित कर अपनी हथेली पर रख लिया और उसे अपने मुख में डालकर निगले बिना ही अपने कंठ में रख लिया। भगवान शिव पर भी उस विष का किंचित् प्रभाव पड़ा। उनका कंठ नीला होगया और तबसे वे नीलकंठ कहलाने लगे।

इसप्रकार शिव ने हालाहल विष के संकट से देव-दानवों और समस्त लोकों को मुक्त कर दिया। अब देव और दानव फिर क्षीरसागर का मंथन करने लगे। इस बार समुद्र से कामधेनु बाहर आयी। ऋषियों ने इस पवित्र धेनु को अपने यज्ञ-प्रयोजनों के लिए ले लिया। फिर

दूर भाग गये। उस कलश के लिए दानवों में कलह छिड़ गयी। अमृत न प्राप्त होते देख देवताओं ने विष्णु से शिकायत की। देवताओं का सारा श्रम व्यर्थ जाते देख विष्णु ने कहा, "तुम चिन्ता न करो! मैं कोई मायाजाल रचकर ऐसी व्यवस्था करूँगा, जिससे तुम्हें अमृत प्राप्त हो जाये!"

इतना कहते ही विष्णु ने मनोमुग्धकारी मोहिनी का रूप धारण कर लिया और वे दानवों के समीप पहुँचे। दानवों ने मोहिनी को देखा और वे उसके अनुपम सौन्दर्य पर मोहित होकर उन्मत्त-से हो गये। वे मोहिनी के निकट जाकर बोले, "इस अमृत के लिए हम लोग आपस में लड़ रहे हैं। तुम इसे न्यायपूर्वक हम लोगों में बाँट दो!"

"तुम लोग मेरे कार्य में बाधा न डालोगे तो मैं अत्यन्त प्रसन्नता से यह अमृत तुम सबमें बाँट दूँगी।" मोहिनी ने कहा।

दानवों ने उसकी शर्त को स्वीकार कर लिया।

मोहिनी ने देवताओं एवं दानवों को अलग-अलग पंक्तियों में बिठाया और देवताओं की पंक्ति में अमृत बाँटने लगी। दानवों ने अपने वचन का पालन किया, वे चुपचाप बैठे रहे। सभी देवताओं ने जब अमृत पी लिया, तब विष्णु ने अपने मोहिनी रूप का संवरण कर लिया और विष्णु रूप में प्रकट हो गये।

जब भगवान शिव ने सुना कि विष्णु ने

उच्चैश्रवा नाम का एक विशालकाय श्वेत अश्व समुद्र से निकला। बलि ने उसकी कामना की। इंद्र ने भी उस अश्व-रत्न को लेना चाहा, पर विष्णु ने उन्हें रोक दिया।

इसके उपरान्त क्षीरसागर से ऐरावत नाम का श्वेत हाथी निकला। उसके चार दाँत थे। इसके बाद पारिजात उत्पन्न हुआ। तदुपरान्त अप्सराएँ और फिर पवित्र तेज धारिणी लक्ष्मीदेवी का उद्भव हुआ। लक्ष्मी ने स्वयं विष्णु के वक्षस्थल पर निवास करने की कामना की। लक्ष्मीदेवी के साथ क्षीरसागर से चंद्र का उदय हुआ।

अन्त में धन्वन्तरि बाहर आये। उनके हाथ में अमृत-कलश था। दानवों ने धन्वन्तरि के हाथों से वह कलश छीन लिया और उसे लेकर

मोहिनी रूप से दानवों को भुलावा देकर देवताओं में अमृत बाँट दिया है, तो वे पार्वती के साथ वृषभ वाहन पर बैठ कर विष्णु के दर्शन करने आये। भगवान शिव ने विष्णु से कहा, "मैंने आप के सब अवतारों का दर्शन किया है। अब मैं आपके मोहिनी रूप को देखने के लिए आया हूँ।"

"दानवों को मोहित करने के लिए मैंने मोहिनी रूप धारण किया था। यदि आपकी इच्छा है तो मैं आपको अपना यह रूप अभी दिखा देता हूँ।" यह कहकर विष्णु तुरंत अदृश्य होगये। दूसरे ही क्षण शिव ने देखा, सामने अत्यन्त सुन्दर एक रमणी गेंद से खेल रही है। वे समझ गये, यही विष्णु का मोहिनी रूप है।

मोहिनी के अनुपम रूप को देखकर शिव को भी अपना भान नहीं रहा। वे पार्वती और प्रमथगणों की उपस्थिति को भी भूल गये। वे सबके समक्ष ही मोहिनी के पीछे दौड़ने लगे। तभी उन्हें इस बात का ज्ञान हुआ कि यह सब विष्णु की माया है। वे आत्म नियंत्रित हो शांत हो गये। विष्णु ने भगवान शिव के आत्मसंयम की प्रशंसा की। शिव भी पार्वती और प्रमथ गणों के समेत कैलास को लौट आये।----

प्राचीन काल में अयोध्या पर बाहू नाम के राजा का शासन था। हैहय वंशी राजपुत्रों ने अयोध्या पर आक्रमण करके इन्हें राज्य से निष्कासित कर दिया। ये अपनी रानियों के साथ वन में चले गये।
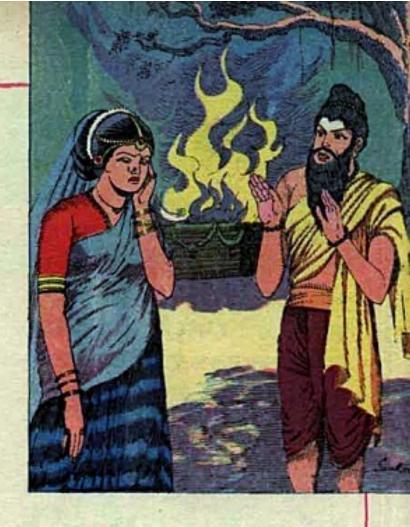
वन में निवास करते हुए बाहू की एक रानी गर्भवती हुई। तभी बाहू का देहान्त हो गया। गर्भवती रानी भी अपने पति के साथ चिता में जलने की तैयारी करने लगी, लेकिन और्वु नाम के मुनि ने इस बात का निषेध किया और उस रानी को बताया कि उसके गर्भ से एक पुत्र का जन्म होगा।

जब अन्य रानियों को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने उस रानी को विष दे दिया। उस विष के सहित रानी के गर्भ से एक बालक का जन्म हुआ। 'गरल-सहित' होने के कारण उस बालक का नाम सगर पड़ा।

कालक्रम में सगर चक्रवर्ती बना और उसने और्वु की मदद से अनेक अश्वमेध यज्ञ किये।

सगर के सुमति एवं केशिनी नाम की दो रानियां थीं, लेकिन इनके कोई संतान नहीं हुई। सगर वन में गये और पुत्र-प्राप्ति की कामना लेकर मुनि और्वु से मिले।

और्वु ने सगर से कहा, "राजन्, आप अपनी दोनों रानियों के साथ कैलास में जायें और तपस्या करें। अवश्य ही आपको पुत्र-प्राप्ति होगी। सगर ने कैलास में जाकर शिव को लक्ष्य बना कठोर तप किया। शिव ने सगर को पुत्र-प्राप्ति का वरदान दिया।

सगर अपनी राजधानी लौट आये। कुछ समय बाद उनकी दोनों रानियां गर्भवती हुईं और उन्होंने दो बालकों को जन्म दिया। केशिनी के गर्भ से असमंजस का जन्म हुआ। सुमति के गर्भ से जो बालक जन्मा, उसमें मुनि और्वु ने साठ हज़ार पुत्रों का अंश बताया। मुनि और्वु के आदेश से उस बालक के साठ हज़ार टुकड़े कर दिये गये और उन्हें अलग पात्रों में रख दिया गया। कालक्रम में उन पात्रों से साठ हज़ार राजपुत्रों का जन्म हुआ।

केशिनी का पुत्र असमंजस बड़ा अत्याचारी था। वह छोटे-बड़े का कोई विचार नहीं करता था और सबको उठाकर नदी में फेंक देता था। उसके अत्याचारों से पीड़ित प्रजाजनों ने राजा सगर से शिकायत की तो राजा सगर ने राजपुत्र असमंजस को नगर से निष्कासित कर दिया।

सगर ने अब अश्वमेघ यज्ञ करने का निश्चय किया और यज्ञाश्व के साथ अपने साठ हज़ार पुत्रों को भेज दिया।

सगर के द्वारा भेजा गया अश्व अनेक देशों का भ्रमण करता हुआ अचानक एक स्थान पर अदृश्य होगया। सगर के पुत्रों ने सब स्थानों पर यज्ञाश्व की खोज की। जब उन्हें अश्व कहीं नहीं मिला तो वे राजधानी को लौट आये। अपने पुत्रों को यज्ञाश्व के बिना आया देख सगर क्रुद्ध हो उठे। उन्होंने अपने पुत्रों को आदेश दिया, "तुम यज्ञाश्व के साथ ही राजधानी में प्रवेश कर सकते हो, यज्ञाश्व के बिना नहीं। जाओ, अश्व को ढूँढ़ कर लाओ।"

देवी के आभूषण
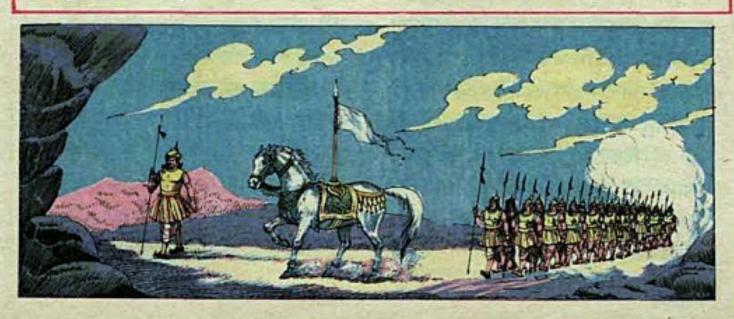
एक छोटे से गाँव कल्याणपुर में देवी का एक मन्दिर था। शिवराम उस मन्दिर का पुजारी था। कल्याणपुर के पास ही केशवपुर नाम का एक और गाँव था। उस गाँव के जमींदार ने एक बार देवी के त्योहार में देवी के लिए नथ, माला, करधनी वगैरह सोने के आभूषण बनवा कर देवी को अलकृंत करवाया जिससे देवी की प्रतिमा और भी खूबसूरत लगने लगी। ये गहने कोई चुरा कर न ले जाए यह जिम्मेदारी पुजारी को ही सौंप दी गई।

शिवराम की पत्नी बड़ी झगड़ालू थी। वह जो चीज़ मांगती अगर उसी दिन वह चीज़ उसे नहीं मिलती तो रात को शिवराम को खाना तक नहीं नसीब होता। बदक़िस्मती से शिवराम की पत्नी रमाबाई की निगाह देवीजी के लिए बने गहनों पर पड़ गई। अब तो दिन प्रति दिन उसके मन में वह गहने पहनने की लालसा प्रबल होती गई। इस कारण वह हर समय सुबह-शाम अपने पति को सताने लगी कि वह किसी तरह तंग आकर देवीजी के गहनें लाकर उसे दे दे।

अपनी पत्नी की इच्छा जान कर शिवराम क्रोध से काँप उठा और झिड़क कर बोला—"अरी तू क्या पागल हो गई है ? एक साधारण औरत को देवीजी के आभूषण पहनना यह महापाप है। अगर तुम ऐसे ही गहने पहनना चाहती हो तो थोड़े दिन सब्र कर लो मैं अपनी कमाई से इसी तरह के गहने बनवा कर तुम्हें दे दूंगा।"

लेकिन रमाबाई इसके लिए नहीं मानी और उलटे उसने अपने पति को चेतावनी दी, "तुम अगर आज रात तक देवी के वे गहने मुझे नहीं लाकर दोगे तो कल सूर्योदय तक हमारे घर के पिछवाड़े नीम के पेड़ पर तुम्हें मेरी लाश लटकी मिलेगी।"

शिवराम यह सोच कर घबरा गया कि

शंभुनाथ जोशी
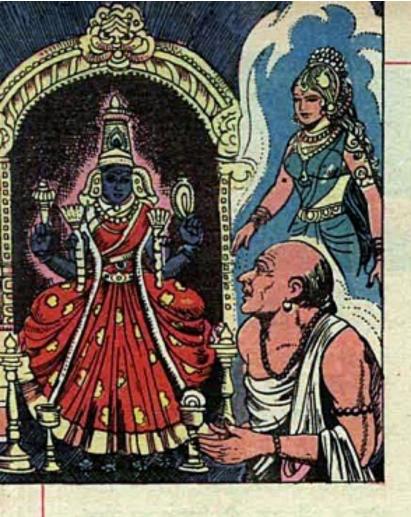
असकी पत्नी जो कहेगी वह जरूर कर बैठेगी। उसी दिन रात को वह देवीजी के मन्दिर में गया ऽगैर उनकी प्रतिमा के सामने हाथ जोड़ कर बोला, "काली माई ! तुम तो मेरी पत्नी के झगड़ालू और जिद्दी स्वभाव से परिचित हो। उसको समझा कर तुम्हारे ये गहने फिर से सौंप दूँगा। मैं अक्षम्य अपराध कर रहा हूँ फिर भी माँ तुमसे प्रर्थिना है, मुझ पर दया करके मुझे क्षमा कर दो।" यह कह कर उसने देवीजी की प्रतिमा पर अलंकृत सारे गहने उतार कर एक गठरी बाँध ली।

जिस समय शिवराम मन्दिर से गहने लाकर बाहर आ रहा था, उसी समय काली माई का एक भक्त उनको देखने आया। उसने शिवराम को देवीजी के आभूषण लेते हुए देख लिया था। उसने काली माई से पूछा, "यह दुष्ट तुम्हारे सारे गहने उतार कर ले जा रहा है। यह देख कर भी तुम चुप क्यों हो ? बिना गहनों के तुम्हारी प्रतिमा की शोभा घट जाएगी। तुम इसी समय पुजारी को उचित सबक़ पढ़ाओ। वरना लोगों में देवी-देवताओं के प्रति पूर्ण रूप से विश्वास घट जाएगा और सब मन्दिरों के गहने चुराने लग जाएंगे। लोगों में उछृंखलता बढ़ जाएगी।"

इस पर काली माई मंद मंद मुस्काई और बोलीं— "यह शिवराम मेरा भक्त है। इसने मुझे वचन दिया है कि वह पुनः मेरे गहने ला देगा। मैं इसकी पत्नी को चार दिन की अविध देती हूँ। अगर वह इन चार दिनों के अन्दर ये गहने अपने पति को नहीं सौंप देगी तो उसके सर पर चोट लगने के कारण वह मर जाएगी।"

मन्दिर से बाहर जाते समय देवी जी की अन्तिम बातें शिवराम के कानों में पड़ीं। वह भय के मारे काँप उठा और देवीजी की प्रतिमा की ओर देखता हुआ खड़ा रह गया। लेकिन इसके बाद उसे कुछ नहीं सुनाई दिया।

शिवराम ने बड़ी सावधानी से मन्दिर के दरवाजों पर ताला लगाया। और गहने लेकर घर आ गया। उसने सारे आभूषण अपनी पत्नी को दे दिए। गहने देख कर रमाबाई की खुशी का ठिकाना न रहा और उसी वक्त उसने काली माई के गहने पहन लिये।

शिवराम ने अपनी पत्नी की ओर क्रोध भरी दृष्टि डाली और उसे देवीजी की बातें सुनाईं । लेकिन रमाबाई के ऊपर इन बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा बल्कि अपने पति की ओर गुस्से से देखतीं हुई बोली, "तुम तो कायर हो। इसीलिए तुम्हारे अन्दर यह डर समा गया है कि तुम देवी के गहने ला रहे हो । मैं तो किसी हालत में ये आभूषण नहीं लौटाऊँगी । आखिर देवी के लिए आभूषणों की क्या आवश्यकता है। वह चाहेंगी तो इस प्रकार के अनेक आभूषण अपने कंठ में सुशोभित करा सकती है ।"

ये बातें सुनकर शिवराम बहुत दुखी हो गया और अपने मन में देवीजी का ध्यान किया और कहा, "देवीजी, मेरी पत्नी को बचाने की जिम्मेदारी तुम्हारी है। यह तो मूर्ख है। ना समझ है। गहनों के लालच में पड़ कर यह धर्म-कर्म को भूल गई है ।"

तीन दिन बीत गए लेकिन रमाबाई ने अपने बदन से गहने नहीं उतारे। शिवराम देवीजी की बातों पर विश्वास करके घबड़ाने लगा ।

उस दिन भी रमाबाई गहने पहने सो रही थी। ठीक आधी रात के समय शिवराम के घर में एक चोर घुस आया। रमाबाई गहरी नीन्द सो रही थी। चोर ने बड़ी सावधानी पूर्वक रमाबाई के सारे गहने उतार डाले। और उन गहनों की गठरी बाँध कर काली माई के मन्दिर की ओर चल पड़ा ।

चोर का इरादा था कि काली माई के गहने भी चुरा कर भाग जाए लेकिन जब वह मन्दिर के पास पहुँचा तो उसने देखा कि मन्दिर का ताला पहले से ही टूटा पड़ा है और उसके दरवाजे खुले पड़े हैं। यह देख कर वह आश्चर्य चकित रह गया। वह समझ गया कि उसके पहुँचने के पहले ही कोई डाकू मन्दिर में घुस गया है। तब उसने अपने हाथ की लाठी को कस कर पकड़ कर मन्दिर में प्रवेश किया । लेकिन इसके पहले ही जो डाकू मन्दिर का ताला तोड़ कर मन्दिर में घुस गया था, वह मन्दिर में गहने.न देख कर चौंक पड़ा। उसके मन में विचार आया कि या तो उसके पहले ही कोई चोर आकर गहने चुरा ले गया है या पुजारी ही उन गहनों को सुरक्षित रखने के लिए अपने

घर ले गया है। वह निराश होकर वापिस लौट रहा था कि उसी वक्त गहनों की गठरी के साथ मन्दिर में घुस आने वाला चोर दिखाई दिया। वह क्रोध से भर कर बोला— "अरे दुष्ट, तुम मुझसे पहले ही आकर देवी के गहने चुरा ले गए हो। इस की सजा भोग लो। देवी ने दण्ड नहीं दिया तो मैं तुम्हें दण्ड देता हूँ।" यह कह कर उसने चोर के सिर पर जोर से लाठी दे मारी।

दूसरे चोर ने पहले ही यह भाँप लिया था। उसी क्षण उसने मन्दिर का ताला तोड़ने वाले चोर के सिर पर लाठी चलाई। परिणामतः दोनों चोर बेहोश होकर गिर पड़े।

दूसरे दिन बहुत तड़के ही रमाबाई की आँख खुल गई। वह अपने बदन पर गहने न देख जोर से चिल्लाई और अपने पति को जगाया। शिवराम घबरा कर देवी के मन्दिर की ओर दौड़ पड़ा। वहाँ पर गहनों की गठरी के साथ दो चोरों को बेहोश पड़े देख उसने सारी बात भाँप ली।

शिवराम गठरी में से गहने निकाल कर देवी को अलंकृत कर रहा था, उसी वक्त रमाबाई भी वहाँ आ गई। पत्नी को देख शिवराम ने कहा— "अरी तुम देख रही हो ना, देवीजी ने कहा था कि चार दिन के अन्दर अगर तुमने ये गहने नहीं लौटाएं तो तुम सिर पर चोट से मर जाओगी। ये सब बातें मैंने अपने कानों से सुनी थीं लेकिन तुमने उन बातों को मेरा भ्रम बताया और मेरी बात की अवहेलना की।"

इस पर रमाबाई देवीजी की प्रतिमा के सामने साष्टांग दण्डवत करके बोली— "माई, मैं बहुत मूर्ख नारी हूँ, मुझे क्षमा कर दो। तुमने मेरे पति की प्रार्थना स्वीकार करके मेरे प्राण बचाए हैं। इसी क्षण से मैं भी तुम्हारी भक्त हूँ।"

उसके बाद गाँव के पहरेदार भी वहाँ आ गए और उसी क्षण होश में आने वाले दोनों चोरों को पकड़ कर न्यायाधिकारी के पास खींच ले गए।

इस घटना के बाद रमाबाई अपना झगड़ालूपन त्याग कर अपने पति की बात मान कर देवीजी की सेवाएं करने लगी।

चाणक्य की कहानी
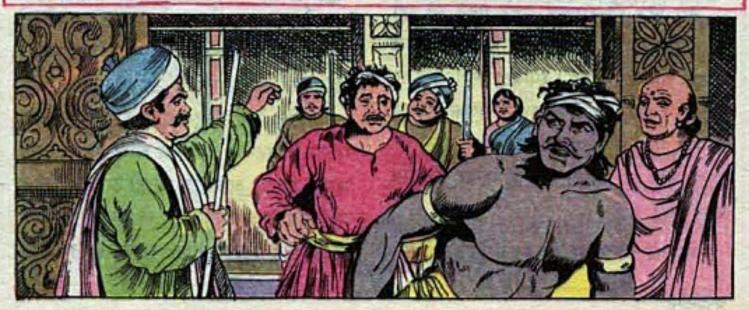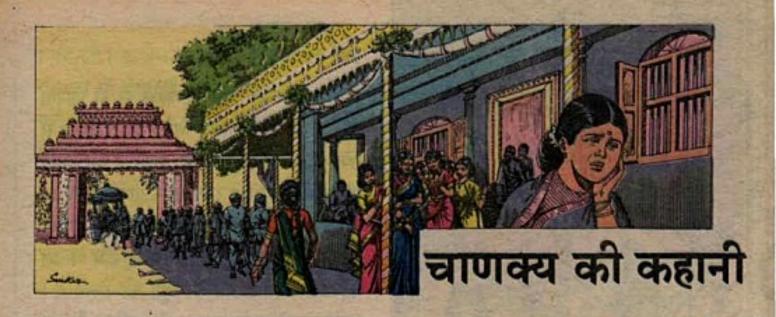
प्राचीनकाल में चणक ग्राम में चणि नाम का एक ब्राह्मण रहा करता था। वह जैन मतावलम्बी था। उसकी पत्नी का नाम चणेश्वरी था। उनके एक पुत्र था। वही चाणक्य के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध हुआ।

चाणक्य सब शिशुओं से विपरीत जन्म के समय सभी दान्तों के साथ पैदा हुआ। मुनियों ने बताया कि दाँतों के साथ जन्म लेनेवाला व्यक्ति राजा बन जाता है। उसका पिता भौतिक कामनाओं से अधिक परलोक की चिन्ता रखता था, इसलिए उसने यह सोच कर अपने पुत्र के सारे दान्त उखड़वा दिये कि उसके पुत्र के लिए भौतिक सुख उचित नहीं है। इस घटना के बाद मुनियों ने अपनी भविष्यवाणी बतायी कि चाणक्य परोक्ष रूप में शासन करेगा।

चाणक्य ने समस्त शास्त्रों का अध्ययन किया। और वयस्क होने के बाद एक गरीब ब्राह्मण की कन्या के साथ विवाह कर लिया।

एक बार चाणक्य की पत्नी अपने छोटे भाई के विवाह के सन्दर्भ में अपने पीहर चली गई। वहाँ पर उसकी छोटी व बड़ी बहनें भी आ पहुँचीं। उनके पति ऊँचे ओहदे पर थे और साथ ही संपन्न थे इसलिए उन औरतों ने चाणक्य की पत्नी की गरीबी की अवहेलना की। अपमानित होकर घर लौट आई हुई पत्नी की हालत जानकर चाणक्य धन कमाने के ख्याल से घर से निकल पड़ा।

चाणक्य ने सुन रखा था कि पाटलिपुत्र का राजा नन्द ब्राह्मणों का अधिक सत्कार करता है। वह पाटलिपुत्र पहुँचा। उसने राज सभा में एक विशाल और आलीशान आसन को देखा। उसे खाली देखकर चाणक्य उस भव्य सिंहासन पर बैठ गया। वह आसन महाराजा नन्द का था।

थोड़ी देर बाद राजा नन्द और उसका पुत्र वहाँ पर आये। वहाँ की एक परिचारिका ने
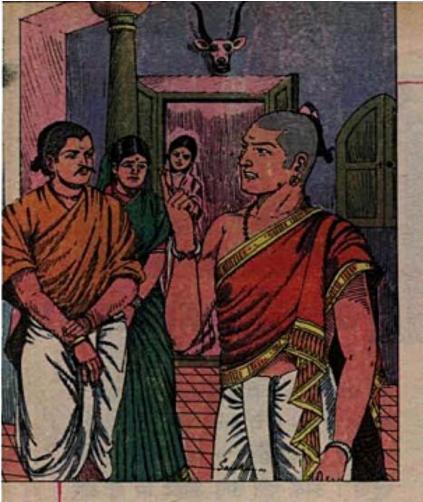
चाणक्य को बैठने के लिए एक और आसन दिखाया फिर भी चाणक्य अपने आसन से नहीं उठा। उसने जानबूझकर ऐसा किया कि अपने जलपात्र को एक और आसन पर रखा, अपनी लाठी को दूसरे आसन पर, अपनी शाल को तीसरे आसन पर तथा यज्ञोपवीत को चौथे आसन पर रख दिया। परिचारिका इस धूर्तता को सहन नहीं कर पाई। यह महाराजा नन्द का, उनके कुल का और राजसभा की मर्यादा का सरासर अपमान था। उसने चाणक्य को लात मार कर बाहर खींच लिया। इसके बाद उसके सभा से निकलवा दिया। इसपर चाणक्य असहनीय क्रोध में आ गया। उसने प्रतिज्ञा की कि वह नन्द वंश को निर्मूल करेगा, और वह वहाँ से निकल पड़ा।

चाणक्य यह समाचार पहले से ही जानता था कि वह किसी योग्य व्यक्ति की सहायता से राज्य शासन कर सकता है, इसलिए वह अपने प्रतिनिधि के रूप में राजा बनने योग्य व्यक्ति का अनुर्वेषण करने लगा। वह अनेक बगरों, गाँवों में घूमता हुआ मयूर पालने वाले गाँव में आ पहुँचा। ये लोग राजा के मयूरों को पालते थे। चाणक्य को मालूम हुआ कि उस गाँव के मुखिया की पुत्री गर्भवती है और वह चंद्र को पीने की कामना रखती है।

चाणक्य ने गाँव के मुखिया को बताया कि मैं तुम्हारी पुत्री के गर्भ से उत्पन्न होने वाले पुत्र को पालने की शर्त पर उसकी कामना की पूर्ति कर सकता हूँ। इस शर्त को मुखिया तथा उसकी पत्नी ने भी मान लिया।

चाणक्य ने एक झोंपड़ी बनवायी और उसकी छत में एक छेद बनवाया। रात के समय जहाँ पर चंद्र की किरणें पड़ती थीं। उस स्थान पर दूध से भरा हुआ पात्र रखवाया, तब गर्भवती को झोंपड़ी में ले जाकर पात्र दिखाते हुए बोला— "लो देखो, वही चंद्र है, उसको पी लो।"

जब वह इस बात को सच मान कर भ्रम में आ गई, तब छत पर बैठा हुआ व्यक्ति क्रमश उसके छेद को बन्द करने लगा। यह ऐसा जान पड़ता था मानो कोई चीज़ धीरे-धीरे रिस रही है

। वह स्त्री यह सोच कर सन्तुष्ट हो गई कि उसने चंद्र को पी लिया है । कुछ समय बाद उसके गर्भ से एक पुत्र ने जन्म लिया । वह सुन्दर और तेजस्वी था । माँ के चंद्रपान प्रसंग को ध्यान में रखकर उस शिशु का नाम चंद्रगुप्त रखा गया ।

इसके बाद चाणक्य ने धन कमाने के हेतु देशाटन प्रारंभ किया । उसे उस गाँव में लौटने में कुछ वर्ष बीत गये । उस गाँव में प्रवेश करते समय चाणक्य को कुछ लड़के दिखाई दिये, जिनमें चंद्रगुप्त भी था । वह राजा-जैसा व्यवहार कर रहा था और बाकी बच्चे उसको राजा मान कर उसके आदेशों का पालन कर रहे थे । चाणक्य ने चंद्रगुप्त को पहचाना नहीं, पर उसका वर्चस्व देख आश्चर्य में आ गया और उस की शक्ति की परीक्षा लेने के लिए उसने आसे कहा कि उसे कोई चीज़ दान में दी जाए ।

चंद्रगुप्त ने झट आदेश दिया— "लीजिए, सामने दूर दिखाई देने वाली गायों की रेवड को हांक ले जाइए । मेरे द्वारा दान देने की बात सुन कर कोई आप को रोकने की हिमात न कर सकेगा ।"

चाणक्य प्रसन्न हुआ । उसने अन्य लड़कों से पूछ-ताछ की तो उसे पता लग गया कि यही लड़का चंद्रगुप्त है । वह उसे राजोचित शिक्षा देने का विचार करने लगा ।

"बेटा, राजा बनते के लिए तुम्हें राज्य चाहिए न ? इसलिए तुम मेरे साथ चलो, तुम्हें

मैं राज्य दिलाऊँगा ।" यह कह कर चाणक्य चंद्रगुप्त को अपने साथ ले गया ।

चाणक्य ने जो धन कमाया था, उससे उसने एक सैनिक दल संगठित किया और उसकी मदद से पाटलिपुत्र को घेर लिया । पर चाणक्य कितना भी नीतिकुशल क्यों न हो, उसकी सैनिक-शक्ति तो बहुत कम थी । शक्तिशाली शत्रु सेना ने चाणक्य की सेना को बड़ी सरलता से पराजित किया । इस पर चाणक्य और चंद्रगुप्त अपने प्राण बचाकर भागने लगे । नन्द के सैनिक उनका पीछा करने लगे । चाणक्य और चंद्रगुप्त जब एक सरोवर के समीप पहुँचे, तब उनका पीछा करने वाले सैनिकों में से एक उनके अत्यन्त समीप आ पहुँचा । उस वक्त

चाणक्य ने एक युक्ति की। वह एक तपस्वी की भांति सरोवर के किनारे बैठ गया और चंद्रगुप्त को सरोवर में उतरने का आदेश दिया।

घुड़सवार सैनिक चाणक्य के निकट आया, उसने पूछा— "बाबा, क्या इधर कोई दौड़ कर आया था?" चाणक्य ने पानी में खड़े चंद्रगुप्त की ओर इशारा किया। सैनिक तत्काल घोड़े से उतर पड़ा। उसने अपनी तलवार नीचे रख दी और पानी में उतरने के लिए अपना कवच उतारने लगा। चाणक्य इसी अवसर की प्रतीक्षा में था। वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ और उसने अपनी तलवार नीचे रखकर पानी में उतरने के लिए अपना कवच उतारने लगा। सैनिक की तलवार लेकर उसकी गर्दन काट डाली।

इसके बाद चाणक्य और चंद्रगुप्त उस सैनिक के घोड़े पर सवार हो वहाँ से भाग गये। उस वक्त चाणक्य ने चंद्रगुप्त से पूछा— "उस सैनिक ने पानी में खड़े तुम को जब देखा, तब तुम्हें कैसे लगा?"

"मैंने यही सोचा कि आगे का कर्तव्य स्वयं गुरुजी जानते हैं!" चंद्रगुप्त ने झट जवाब दिया।

यह जवाब सुन कर चाणक्य इस निर्णय पर पहुँचा कि जब चंद्रगुप्त राजा बनेगा और वह स्वयं मंत्री बन जाएगा, तब भी चंद्रगुप्त उसके प्रति विश्वासपात्र बना रहेगा और उसके आदेशों का पालन करेगा। इतने में एक और घुड़सवार उनका पीछा करता हुआ आ पहुँचा। चाणक्या ने युक्ति पूर्वक उसका भी वध कर डाला। इस बार चाणक्य ने कपड़े धोने वाले एक धोबी से यह कहकर उसको वहाँ से भेज दिया कि "अरे सुनो तो, राजा धोबियों पर नाराज़ होकर तुम लोगों को पकड़ने के लिए अपने सैनिकों को भेज रहे हैं!" फिर उसकी जगह वह खड़ा हो गया और चंद्रगुप्त को पानी के अन्दर भेज दिया। दूसरे घुड़सवार के मरने के बाद फिर वे वहाँ से भाग खड़े हुए।

भूख से तड़पते हुए वे दोनों उस दिन शाम तक एक गाँव में पहुँचे। वे दोनों यह सोचते हुए उस गाँव का चक्कर लगाने लगे कि कौन गृहस्थ उनको खाना खिलाएगा, तब उन्हें एक मकान के

अन्दर एक विचित्र दृश्य दिखाई पड़ा। एक अधेड़ उम्र की गरीब औरत ने रसोई बनाकर थालियों में अपने बच्चों को परोस दिया। एक लड़के ने जल्दबाजी में आकर थाली में परोसे खाने पर हाथ रखा, तब उस का हाथ झुलस गया। इसे देख उस की माँ बोली— "अरे, यह क्या ? तुम भी चाणक्य जैसे मन्दमति मालूम होते हो ?"

एक अपरिचित औरत के मुँह से ये बातें सुन कर चाणक्य विस्मय में आ गया, उस घर में प्रवेश करके उसने उस औरत से पूछा— "तुम्हारी इन बातों का मतलब क्या है ?"

"बेटा, इसे एक तरफ़ से खाना लेकर खाना चाहिए था, पर इसने थाली के बीच हाथ रख दिया और अपना हाथ जला लिया। इसलिए इसने भी चाणक्य जैसे मूर्खता पूर्ण कार्य किया है। परिसरों पर विजय प्राप्त करते हुए तब चाणक्य को राजधानी घेर लेनी थी।" गरीब औरत ने कहा।

गरीब औरत की बातों से चाणक्य ने एक सबक़ सीख लिया। इसके बाद चाणक्य चंद्रगुप्त को साथ लेकर हिमवत्कूट नाम के राज्य में पहुँचा और उसके शासक पर्वतक के साथ एक समझौता कर लिया। इस समझौते की शर्तें थीं— नन्दराज्य को जीतने में पर्वतक चाणक्य की सहायता करेगा, इस के बदले में वह नन्द राजा के हारने पर उसके राज्य का
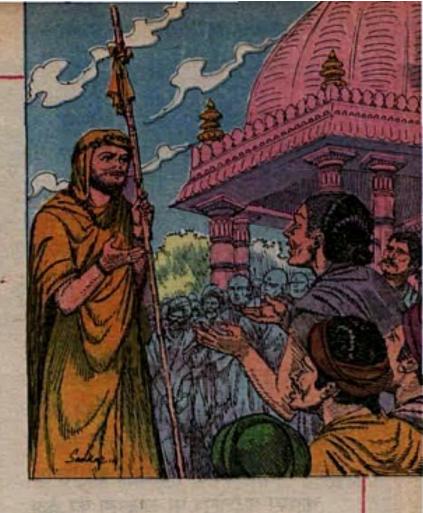
आधा राज्य पाएगा।

इस समझौते के अनुसार चाणक्य और पर्वतक दोनों मिलकर पाटलीपुत्र के परिसरों पर विजय पाने लगे। पर एक नगर पर वे अधिकार नहीं कर पाये। वह बड़ा शक्तिशाली और मजबूत दुर्ग था। उस को हराने का कोई मार्ग न पाकर चाणक्य ने एक त्रिदण्डी संन्यासी का वेष धर कर नगर में प्रवेश किया। उस नगर में सप्त मातृक का मन्दिर था। वहाँ की जनता का विश्वास था कि नगर के उस मन्दिर में सात देवियाँ निवास करती हैं और वे उस नगर की रक्षा करती हैं। दुश्मन के घेरे से ऊब गई जनता ने संन्यासी वेषधारी चाणक्य को देख पूछा— "स्वामिन, इस घेरे का अन्त कब तक

होगा ?"

"बेटे, यह घेरा तब तक बना रहेगा, जब तक सप्त मातृक इस मन्दिर को छोड़ कर नहीं जायेंगी।" मूर्ख जनता ने संन्यासी की बातों पर विश्वास करके मंदिर से देवियों की प्रतिमाओं को हटाया। इसके बाद चंद्रगुप्त और पर्वतक को चाणक्य का संकेत मिल गया।

इस पर उन्होंने घेरे को हटाकर वापस जाने का अभिनय किया और अपने सैनिक दलों को थोड़ी दूर ले गये। नगरवासी घेरे को हटते देख उत्साह में आ गये और खुशियाँ मनाने लगे। उस वक्त शत्रु सेनाओं ने अचानक नगर पर हमला करके नगर पर अधिकार कर लिया।

चाणक्य पाटलीपुत्र पर आक्रमण कर बैठा, इस युद्ध में नन्द ने पराजित होकर चाणक्य की अधीनता को स्वीकार कर लिया। चाणक्य नन्द को प्राण दान करके बोला— "तुम इस राज्य को छोड़ कर चले जाओ। पर अपने साथ उतनी ही संपत्ति लेते जाओ, जितनी तुम एक रथ पर ले जा सकते हो !"

चाणक्य के आदेशानुसार नन्द ने रथ पर अपनी दो पत्नियों, पुत्री दुर्धरा को सवार कराया तथा अमूल्य आभूषण आदि अपने साथ लेकर निकल पड़ा। रास्ते में उन्हें रथ पर सवार चंद्रगुप्त दिखाई दिया। चंद्रगुप्त को देखते ही दुर्धरा उस पर मोहित हो गयी। अपनी पुत्री की मनोकामना को भांप कर नन्द ने कहा— "बेटी, अगर तुम स्वयंवर करना चाहती हो तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।"

अपने पिता के मुँह से ये बातें सुन कर दुर्धरा अपने पिता के रथ से उतर पड़ी और चंद्रगुप्त के रथ पर जा बैठी। जब वह उस रथ पर सवार हो रही थी, तब चंद्रगुप्त के रथ के पहिये के नौ पत्ते फटाफट टूट गये। इसे चंद्रगुप्त अपशकुन मान कर दुर्धरा को स्वीकार करने में सन्देह करने लगा। पर चाणक्य ने उसे समझाया— "वत्स, यह एक शुभ शकुन है। इसका आशय है कि तुम्हारे वंश के लोग नौ पीढ़ियों तक राज्य करेंगे।"

(अगले अंक में समाप्य)

बारिश की रात का चोर

बस्तर का अमीर शेख़ हसन एक कुशल शासक था। एक दिन शहर का कोतवाल एक जवान को लेकर उसके पास आया और बोला, "हुज़ूर, इस सलीम नाम के जवान को जो आप देख रहे हैं, यह बड़ा चालाक चोर है। रात में जब मूसलाधार बारिश हो रही थी, तब यह हमारे शहर के मशहूर धनवान दाऊद ख़ाँ के घर में घुस गया। हमने इसे रंगे हाथ पकड़ लिया है।"

अमीर शेख़ हसन ने उस जवान की तरफ़ क्रोधभरी दृष्टि डाली, लेकिन यह देखकर वह अचम्भे में आ गया कि उस जवान के चेहरे पर चोर होने का कोई लक्षण नहीं है। इतना ही नहीं, बल्कि वह बहुत ही गौरवशाली व्यक्ति लग रहा था।

"क्या तुम चोरी करने के लिए दाऊद ख़ाँ के घर में घुसे थे?" अमीर ने सलीम से सवाल किया।

"जी, यह सच है!" सलीम ने गरदन झुकाये ही जवाब दिया।

"तुम जानते हो, तुम्हारे गुनाह की क्या सजा है? दोनों हाथ काट दिये जायेंगे।" अमीर ने कहा।

सलीम ने मौन रहकर ही सिर हिला दिया। अमीर शेख हसन एक कुशल प्रशासक था। वह समझ गया कि युवक अपने को निर्दोष बताकर विनती करना नहीं चाहता।

अमीर ने कोतवाल से कहा, "ठीक है! इसे क़ैद में डाल दो। कल मैं इसे सजा दूँगा।"

उस रात अमीर शेख़ हसन कारागार की तरफ़ चल पड़ा। वहाँ उसे किसी के मधुर कंठ से गाने की आवाज़ सुनाई दी। अमीर उसी दिशा में चलता गया तो उसने देखा, गानेवाला और कोई नहीं वही युवक सलीम था, जिसे कल चोरी के इलज़ाम में पकड़ा गया था। अमीर शेख़ हसन उसके पास जाकर बोला,

'अरब की रातों' से एक कहानी

उपस्थित हुए। अमीर शेख़ हसन तथा अन्य पदाधिकारी एक ऊँची वेदी पर आसीन थे। सिपाहियों ने सलीम को वेदी के सामने ले जाकर खड़ा कर दिया।

अमीर शेख़ हसन ने ऊँची आवाज़ में सलीम से पूछा, "बताओ, तुम दाऊदखाँ के घर चोरी करने के लिए नहीं, बल्कि किसी और काम से गये थे, यह बात ठीक है न ? तुम उस घर में किसी परिचित व्यक्ति से मिलने के लिए गये थे, किसी ज़रूरी काम से गये थे, बोलो, सही है न ?"

"हुजूर, सचमुच उस घर में मेरा और कोई काम नहीं था।" सलीम ने दृढ़ स्वर में जवाब दिया।

सलीम का जवाब सुनकर अमीर खीज उठा। उस युवक को सज़ा से बचाने की उसकी कोशिश बेकार हो गयी थी। शेख़ हसन ने मन में सोचा कि निश्चय ही यह एक मूर्ख इन्सान है।

"तो ठीक है ! इसके दोनों हाथ काट डाले जायें !" अमीर ने आदेश दिया।

एक सिपाही तलवार उठाकर सलीम की ओर बढ़ा। तभी भीड़ में से एक युवती दौड़ी हुई वेदी पर पहुँची और सलीम तथा अस्त्रधारी सिपाही के बीच खड़ी हो गयी। वह गंभीर स्वर में बोली, "आप लोग चाहें तो मेरे हाथ काट दीजिए, पर इसे छोड़ दीजिए। यह झूठ बोल रहा है।"

अमीर ने सिपाही को दूर हटने का हुक्म

"मेरा दिल कहता है कि तुम चोर नहीं हो। कल तुम्हें हाथ काटने के लिए दंड-स्थल पर ले जाया जायेगा। तब मैं वहाँ जमा हुई भीड़ के सामने एक बार और सवाल करूँगा। तुम कह देना कि तुम दाऊदखाँ के घर चोरी करने के लिए नहीं, किसी और काम से गये थे। मैं तब तुम्हें सिर्फ़ एक महीने की सज़ा देकर रिहा कर दूँगा।"

"हुजूर, मैं आपकी इस मेहरबानी के लिए बहुत एहसानमन्द हूँ।" सलीम ने जवाब दिया।

अमीर को पक्का विश्वास था कि सलीम निश्चय ही उसकी सलाह पर अमल करेगा। नगरवासियों को जब मालूम हुआ कि अमुक समय एक चोर को हाथ काटने की सज़ा दी जायेगी, तो वे हज़ारों की संख्या में वहाँ

दिया और आँखों में आँसू भरकर खड़ी उस युवती से कहा, "क्या तुम सच्ची बात बता सकती हो ?"

युवती, जिसका नाम नग़मा था, उसने अपने आँसू पोंछकर कहा, "हुज़ूर, कुछ वर्ष पहले हमारा परिवार बस्तर में नहीं, दूसरे शहर में रहता था। हमारे घर के सामने एक और धनी आदमी का मकान था। सलीम उसी का बेटा है। मेरे और इसके परिवार के बीच अच्छे दोस्ताना सम्बन्ध थे। इसलिए मेरे बुजुर्गों ने सलीम के साथ मेरी शादी करने का निश्चय किया।

पर परिस्थितियाँ बदलीं। किन्हीं कारणों से हमारा परिवार बस्तर पहुँचा। मेरे माता-पिता तथा अन्य बुजुर्गों ने इसी शहर में अपना स्थायी निवास बना लिया। इसी बीच सलीम के परिवार पर काफ़ी विपदा आयी और ये लोग ग़रीब हो गये। हमारे परिवारों के बीच धीरे-धीरे आना-जाना भी बंद हो गया।

सलीम दो दिन पहले किसी काम से बस्तर आया था। इस शहर में सलीम पहली बार आया था। रात को जब यह अपने डेरे की तरफ़ लौट रहा था तो रास्ते में आँधी-पानी में फँस गया। भींगने से बचने के लिए इसने बारिश के रुकने का इन्तज़ार करना उचित समझा और एक मकान की सीढ़ियाँ चढ़कर उसके चबूतरे पर पहुँचा। सलीम नहीं जानता था कि वह मेरा मकान है।
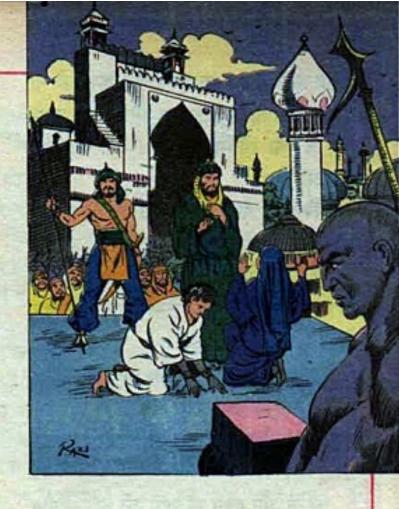
सलीम चबूतरे पर खड़ा हुआ था। आसमान में बिजली कड़ कड़ा रही थी। बिजली की कौंध में मैंने अपने कमरे की खिड़की से सलीम को देखा और पहचान लिया। किवाड़ खोलकर मैं इसे घर के अन्दर ले गयी और बदन पोंछने के लिए इसे तौलिया दिया। उस समय हमारे घर के सभी लोग सो रहे थे।

हमने घंटे भर तक इधर-उधर की बातें कीं और मैंने सलीम को बताया कि मेरी शादी एक धनवान आदमी के बेटे के साथ तय हो चुकी है और मेरे होनेवाले ससुर इस समय हमारे घर में मेहमान हैं।

तब सलीम ने हँसकर मुझसे सवाल किया था, "नग़मा, वर्षा-पानी की इस आधी रात में मैं

तुम्हारे कमरे में हूँ। अगर यह बात किसी को भी पता लग गयी, तो अच्छा न होगा। सब हमारे बारे में क्या सोचेंगे, क्या इस बात का तुम्हें एहसास है ?"

मैंने कहा था, "सलीम, अगर मेरे घर के लोग तुम्हें देख लें तो मैं 'चोर-चोर !' कहकर चिल्लाऊँगी। ऐसी हालत में मेरी इज्जत बचाने के लिए तुम भी यह मान लेना कि तुम एक चोर हो !"

थोड़ी देर बाद पानी पड़ना बन्द हो गया। सलीम जाने के लिए बाहर निकला तो इसे देख हमारा एक नौकर चिल्ला उठा, "चोर ! चोर ! पकड़ लो !"

घर के और लोग भी जाग उठे और सलीम को पकड़ लिया। मेरे माता-पिता तथा अन्य बुजुर्ग जानते थे कि सलीम चोर नहीं है, पर वे यह सोचकर चुप बने रहे कि घर में मेहमान हुए उनके समधी मेरे चरित्र पर संदेह करेंगे।

नग़मा के मुँह से सारी बात सुनकर अमीर शेख़ हसन की आँखें भर आयीं। उसने रूमाल से अपनी आँखें पोंछीं और भीड़ को सम्बोधित कर कहा, "सलीम नाम का यह युवक अत्यन्त साहसी और ईमानदार है। एक निर्दोष युवती के चरित्र पर कोई दाग़ न लग जाये, इसलिए यह अपने दोनों हाथों से वंचित होने के लिए भी तैयार हो गया। सच्चा त्याग ऐसा ही होता है। मेरे कोई बेटी होती तो मैं निश्चय ही उसकी शादी इस युवक से करता और इसे अपना दामाद बनाकर अपना गौरव बढ़ाता।"

तभी नग़मा का पिता भीड़ में से निकल कर वेदी के पास पहुँचा और अमीर को सलाम करके बोला, "हुजूर, आप मेरी बेटी नग़मा की शादी सलीम से करने की अनुमति दीजिए ! मैंने इस हीरे का सच्चा परिचय छिपाया, इसके लिए मैं शर्मिन्दा हूँ और माफ़ी चाहता हूँ।"

सब सुनकर अमीर के चेहरे पर मुस्कराहट आ गयी। लोगों ने तालियाँ बजाकर अपना हर्ष प्रकट किया। उसी दिन अमीर की निगरानी में नग़मा और सलीम की शादी धूमधाम से कर दी गयी।

स्कॉटलैंड का जंगली बिलाव

स्कॉटलैंड के ऊँचे पहाड़ों तथा निर्जन घाटियों में जंगली जानवर अपने आहार की खोज अधिक असानी से कर लेते हैं। इसलिए ब्रिटिश द्वीपों और दूसरे स्थानों पर कहीं न दिखाई देनेवाले जंगली बिलाव स्कॉटलैंड की इन पहाड़ी घाटियों में अपना निवास बना चुके हैं। इन मैदानों, उतार-चढ़ाव वाले पहाड़ों, नदियों एवं झरनेवाले प्रदेशों में जंगली बिलावों ने मानव ख़तरा न होने के कारण भी अपना आवास बनाया है।

किसी ज़माने में ये बिलाव ब्रिटेन में अधिक संख्या में थे। लेकिन अब वहाँ मानवों का संचार अधिक होने के कारण ये उत्तरी इलाकों में चले गये।

ये जंगली बिलाव साधारण बिल्लियों की अपेक्षा आकार में थोड़े बड़े व बाघ के बच्चों की तरह होते हैं। इनका रंग भूरा एवं बैंगनी होता है। ऊँचे पैर, शरीर में घने रोम एवं चतुरस्त आकृति के सिर वाले इन जानवरों की पूँछ क़रीब तीन चौथाई मीटर लंबी होती है। पूँछ के चारों तरफ़ चार-पाँच गोल धारियाँ होती हैं।

ये बिलाव वृक्षों की खोखलों एवं पत्थरों की सुरंगों में रहते हैं। आहार प्राप्त करने के लिए ये बड़ी फुर्ती से शिकार खेलते हैं। दिन हो या रात— ये बिलाव अकेले ही शिकार करते हैं। ये खरगोश, चूहे, कबूतर इत्यादि के लिए बड़े धैर्य के साथ इन्तज़ार में बैठे रहते हैं और एक ही छलांग में झपटकर उन्हें पकड़ लेते हैं। जब आहार नहीं मिलता तो ये नदी के जल में अपने पंजों से मछलियां पकड़ कर खाते हैं। ये वसन्त ऋतु में साल में एक बार गर्भ-धारण करते हैं।

ताक़तवर व तेज़ नाखूनों से सदा रौद्र दीखने वाले इन जंगली बिलावों को पालतू बनाकर पालना असंभव है। अगर कभी इनको बच्चा ही पकड़ कर पिंजरे में बंद कर रखा गया तो आहार देनेवाले व्यक्ति के हाथों को ही इन्होंने काट डाला।

एक समय था जब लोग इनका शिकार करके इन्हें खाया करते थे। अब इन बिलावों की जाति समाप्त होने की स्थिति में है, इसलिए लोग अब इनकी रक्षा का प्रयत्न कर रहे हैं। इन बिलावों का एक लाभ यह भी है कि ये पेड़ों को नुक़सान पहुँचाने वाले गिलहरी जैसे जानवरों की संख्या की वृद्धि को नियंत्रण में रखते हैं।

बाल उपहार योजना.

यही आपका सपना रहा है
न कि जब आपका लाड़ला घर के बाहर कदम रखे...
तो उसे दुनिया की हर खुशी हासिल हो!
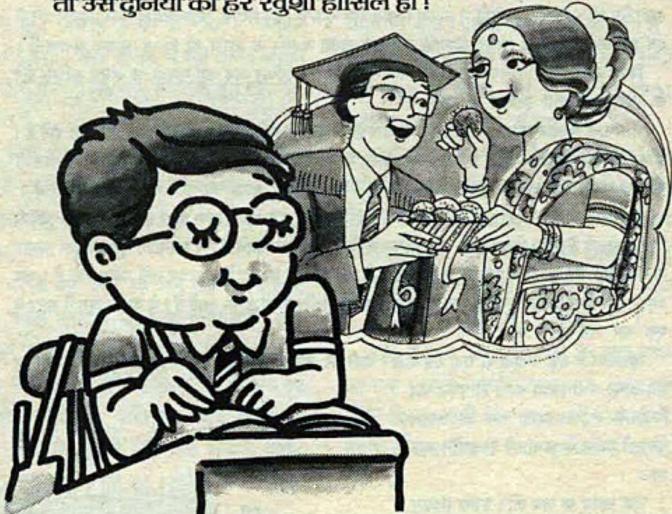
अचानक ही आप महसूस करते हैं कि आपका लाड़ला अब सयाना हो चुका है. मां-बाप की सुरक्षित दुनिया से निकलकर उसे विशाल दुनिया का सामना करना है. अपने दिल में कितने ही अरमान, कितने ही सपने लेकर वह घर के बाहर कदम रखता है... और उसके मां-बाप होने के नाते आप भी तो उसके लिए ऐसा ही सपना संजोते हैं!

इसलिए अपने लाड़ले का भविष्य सुखमय बनाने के लिए आज ही से बचत शुरू कीजिए, बाल उपहार योजना अपनाकर उसकी भावी सुरक्षा की ओर सही कदम उठाइए. जी हां, एक ऐसी अनोखी योजना जिसमें बच्चे की उम्र के साथ-साथ आपकी बचत की राशि भी बढ़ती जाती है.

आप चाहे जितनी बार इस योजना में निवेश कर सकते हैं... चाहें तो हर साल! बेटे के 21 वर्ष और बेटी के 18 वर्ष के होने पर एक बड़ी राशि प्राप्त कर सकते हैं.

इसके अलावा एक सालाना लॉटरी ड्रॉ... जिसमें हैं अनेकों आकर्षक नक़द इनाम जीतने के मौके ही मौके! तो आइए, अपने बच्चे को दीजिए सबसे शानदार तोहफ़ा... एक सुरक्षित और सुखद भविष्य.

रिश्तेदार (माता-पिता के अतिरिक्त) एवं मित्र भी इस योजना में निवेश कर सकते हैं... ऐसे बच्चे के भविष्य के लिए जिसे वे चाहते हों.

(सार्वजनिक क्षेत्रीय आर्थिक संस्था)

बम्बई • कलकत्ता • मद्रास • नई दिल्ली
अहमदाबाद • गोहाटी • जयपुर • कानपुर
लुधियाना • त्रिचूर • विजयवाड़ा • भुवनेश्वर

Sista's UTI—657/85 HIN

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां अप्रैल १९८६ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

A. V. Rangaiah

M. C. Morabad

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ फ़रवरी १० तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियां केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

दिसम्बर के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो: "तेरी खिलखिलाहट!"

द्वितीय फोटो: "मेरी मुस्कुराहट!!"

प्रेषक: बी. एम. दवे, C/o. डाकघर, जेतपुर - ३६० ३७०, जिला - राजकोट (गुजरात)

'क्या आप जानते हैं' के उत्तर

मलगासे (मड्गास्कर) २. सिसली ३. क्रिस्तान डाकुन्हा ४. तीन सौ से अधिक ५. सात हज़ार एक सौ छह।

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

दाँतों को सड़न से

ने

कैसे बचाया ?

और फोरहॅन्स फ्लोराइड,
देता है जानी मानी
फोरहॅन्स की सुरक्षा भी.
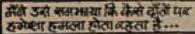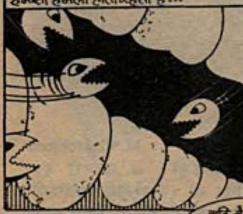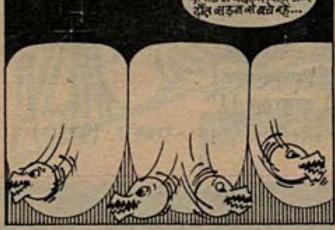
फोरहॅन्स फ्लोराइड... मसूड़ों को संकुचित करे दाँतों की सड़न रोके.

404 GM-183 HIN
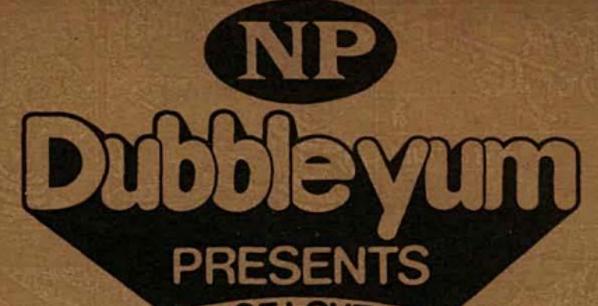
A NEW WORLD OF LOVE & ADVENTURE
FUN & FROLIC!

Look for the LUCKY COUPON in
NP
Dubbleyum
Packet

COLLECT

One latest comic book
for 12 lucky coupons
or
The latest edition of
Enid Blyton or
Mills & Boon novel
for 30 lucky
coupons

DOUBLE COLOURS
DOUBLE FLAVOURS
DOUBLE SIZE AND
BIGGER BUBBLES

The National
Products
BANGALORE-32

NOTHING CAN BEAT A NP BURST OF FROLIC

बबलूजी का मन घबराए
खेले बिना रहा न जाए
बीमारी आड़े आ जाए,
संगी साथी पास न आए.
फिर एक्को एक्को के आए
१२ रंगबिरंगी साथी
कागज झूमा एक्को रंग में
बन गए तोता, बंदर, हाथी
एक्को हरे और एक्को पीले
लाल और ऑरेंज, भूरे, नीले
काले, बैंगनी, वायलेट, गुलाबी
अब तो स्केच पेन एक्को ही लें
रंगों से यारी, मौज-मस्ती तुम्हारी!
१८, सुभाष रोड, विले पारले (पूर्व), बम्बई-४०० ०५
EKCO